भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 14 | **जनवरी-फरवरी-मार्च** 2013 | **अंक** 1-2-3

जब जागे तभी सवेरा

मेरे साथ जर्मनी में एक ऐसी घटना घटी, जिसने मेरी जिन्दगी का रुख ही बदल दिया। **जब मैंने घटना गाँधीजी को सुनायी, तो उन्होंने कहा कि इसे बार-बार और हर जगह सुनाइये और इसे सुनाते हुए कभी न थकिये।**

जब मैं जर्मनी पहुँचा, तो प्रोफेसर स्मिथ से मेरी मुलाकात हुई। वे बहुत बड़े विद्वान थे। उन्होंने हिन्दू संस्कृति और धर्म के बारे में मुझसे अनेक प्रश्न पूछे। मैं उनमें से किसी एक भी सवाल का जवाब नहीं दे पाया, तो डॉ० स्मिथ बड़े हैरान हुए। मुझे खयाल आया कि मैं बनारस से आया हूँ, इसीलिए शायद प्रोफेसर साहब मुझे हिन्दू समझ रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं हिन्दू नहीं हूँ। उन्होंने कहा—''मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप मुसलमान हैं। आपका नाम महमूद है। आप सैयद खानदान के हैं। मगर क्या आप अरब से आकर हिन्दुस्तान में आबाद हो गये हैं?'' इस पर मैंने जवाब दिया—''नहीं, पुश्तों से हमारे आबा व अजदाद हिन्दुस्तान में रहते आये हैं और मैं भी हिन्दुस्तान में ही पैदा हुआ हूँ।''

''क्या आपने गीता पढ़ी है?'' उन्होंने सवाल किया। मैंने कहा—''नहीं।'' उनकी हैरानी बढ़ती जा रही थी। और मैं उनकी हैरानी और सवालों से परेशान भी था, शर्मिन्दा भी। उन्होंने फिर पूछा—''मुमकिन है, आप अपवाद हों। या क्या सब पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानियों का यही हाल है?'' मैंने उन्हें बताया कि ज्यादातर हिन्दुस्तानियों का, चाहे वे मुसलमान हों या हिन्दू, यही हाल है। हम एक-दूसरे के धर्मों के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस पर वे सोच में पड़ गये।

इस घटना ने मेरी जिन्दगी पर भी बहुत गहरा असर डाला। मैंने सोचा, वाकई हम हिन्दुस्तानियों की यह कितनी बड़ी बदकिस्मती है कि हम सदियों से एक दूसरे के साथ रहते आये हैं, पर एक दूसरे के धर्म, सभ्यता और संस्कृति तथा रस्मो-रिवाज से कितने अनभिज्ञ हैं! और मैंने जर्मनी में रहते हुए ही हिन्दू धर्म और खास तौर पर गीता का अध्ययन आरम्भ कर दिया।

—डॉ० सैयद महमूद

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

अर्थात्—जहाँ समग्र विश्व एक नीड़ में समाहित हो जाता है। इस अवधारणा को हमने प्रत्यक्ष होते देखा प्रयाग के महाकुम्भ में। पौष-मास की मकर-संक्रान्ति से लेकर माघ-पूर्णिमा तक देश-विदेश से आये लगभग तीन-करोड़ लोगों ने गंगा-यमुना-सरस्वती के पवित्र-संगम में अमृत-स्नान कर, भुवन-भास्कर सूर्य को अपनी आस्था का अमृत-अर्घ्य प्रदान करते हुए अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया।

हमारी संस्कृति का पुरा-प्रतीक है समुद्र-मंथन का रूपक, जब सतत संघर्षशील-जातियों ने मिल-जुलकर क्षीर-सागर को मथ डाला और अंत में उपलब्ध कर लिया अपना प्राप्य-अमृत। आज भी भारतीय संस्कृति की जड़ों का अंत:सिंचन करता रहता है यह दिव्य अमृत-कुम्भ। इसी मांगलिक पूर्ण-कलश से छलकती बूँदों की आस सँजोये गाँवों-नगरों, प्रान्त-प्रान्तरों, देश-देशान्तरों से इकट्ठा होते हैं लाखों-करोड़ों आबालवृद्ध नर-नारी और एक-ही परिधि में बस्ती बसा कर अपनी आदिम-आस्था का उद्‌गान करते हैं। सचमुच इस विश्व-नीड़ में विश्रान्ति पाती है विश्व-वेदना....!

कहते हैं कि समुद्र-मंथन में अमृत से पहले उद्‌भूत हुआ था कालकूट या हलाहल-विष और दुर्भाग्य से इसी विषस्पंद में साँस लेने को मजबूर हैं हम-सभी—कोटि-कोटि अमृत-पुत्र। एक ओर दिल्ली-दुराचार से उद्वेलित जनांदोलन से संवेदनहीन सत्ता विचलित दिखलायी पड़ती है किन्तु उसकी ऐंठ और पुलिसिया-धौंस बनी रहती है। हादसे का मुआवज़ा देकर, जाँच आयोग और कठोर कानून बनाने की मरहम-पट्टी करते हुए विदेशी-निवेश की प्रतीक्षा में वार्षिक-बजट बनाती है सरकार और रुपये की कीमत एवं आकार 'अठन्नी' से 'चवन्नी' में सिमटने लगता है। रोज-ब-रोज सुरसा की तरह मुँह फैलाती महँगाई, कर्ज, भारी घाटा, रोजगार-शून्यता, गिरती विकास-दर जैसे कई घटक मिलजुलकर जिस सर्वग्रासी-संकट का पूर्वाभास दे रहे हैं उसका समाधान केवल विदेशी निवेश नहीं बल्कि राष्ट्रीय संसाधनों के सम्यक् उपयोग और निवेश में है।

जीवन के इसी विषम विष-स्पंद से विकल संत्रस्त 'जन' की उपस्थिति हिन्दी और इतर भारतीय भाषाओं की साहित्य-रचना में स-प्रमाण दर्ज की जा रही है। इधर की कविताओं, कहानियों, नाटकों, उपन्यासों में इस जन के अन्त:-बाह्य संघर्ष एवं व्यवस्था के दुश्चक्र से उठती चीत्कार की प्रतिध्वनि सुनायी पड़ती है। यहाँ एक ओर पारिस्थितिक-कुंठा, हताशा से उपजते असहिष्णु-आक्रोश और हिंस्र-मनोवृत्ति के बीच मूल्यों का क्षरण दिखलायी पड़ता है तो दूसरी ओर खोखली होती संवेदना को सहेजने की साहित्यिक कोशिश भी है कि शायद 'कुछ' बच जाये।

इसी 'कुछ' यानी अमृत को पाने, बचाने की दूसरी कोशिश थी जयपुर में सम्पन्न साहित्य-महोत्सव। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकारों के रचनात्मक-फलक पर उनसे प्रत्यक्ष संवाद श्रोताओं को वैश्विक-चिंताओं से रू-ब-रू करते हुए उनकी सोच को व्यापक क्षितिज प्रदान कर रहा था। इस समारोह में विवादों से बचने की तमाम कोशिशों के बावजूद अंतिम

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

सत्रों में आशीष नंदी की एक सामान्य टिप्पणी पर विवाद हो ही गया। कथित वर्ग-आन्दोलन, शासकीय-कैफियत और मीडिया की सरगर्मियों से त्रस्त होकर अंतत: बेचारे विचारक, रचनाकार नंदी को माफी माँगनी पड़ी तब जाकर इस प्रकरण का पटाक्षेप हुआ। इसी दरम्यान अपने उपन्यास 'मिडनाइट चिल्ड्रेन्स' पर बनी फिल्म के प्रथम प्रदर्शन के सिलसिले में सलमान-रुश्दी भी भारत आये। रुश्दी को बंगाल-बुक-फेयर में भी भाग लेना था किन्तु उनके इस कार्यक्रम को बंगाल-सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया। इस प्रतिबंध से व्यथित रचनाकार खीझ कर बोल उठा कि 'भारत में सांस्कृतिक आपात्-काल लागू है!'

कहना न होगा कि पूर्णकुम्भ-सी अमृत छलकाती हमारी संस्कृति इसी विषाक्त कालकूट-आवरण के घेरे में साँस ले रही है। एक ओर संवेदन-हीन शासन-तंत्र द्वारा उन्मुक्त किया गया लोक-लुभावन शोषक-बाज़ार है तो दूसरी ओर जड़तावादी-मानसिकता। इस दोहरे विष-स्पंद के बीच भी हम सँजोये हुए हैं सत्य-शिव-सुंदर की आशा-अभिलाषा; इसीलिए हमारे छोटे-से नीड़ में त्राण खोज रहा है विश्व-मानव और हमारे-ही आकाश में गूँज रही है देववाणी—

डरो मत अरे अमृत-संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि,
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि।

सर्वेक्षण

● **यह कैसा आतंक :** एक अरसे की ऊहापोह के बाद मुम्बई-विस्फोट में पकड़े गये आतंकवादी अज़मल कसाब को फाँसी दी गयी और उसी क्रम में संसद-भवन पर हमले के सूत्रधार अफज़ल गुरु को भी लटका दिया गया। परिणामत: सक्रिय हो गये देश में मौजूद आतंक के 'स्लीपिंग-माड्यूल्स' और हैदराबाद-विस्फोट से दहल उठा देश। इस संवेदनशील मुद्दे पर भी माननीय गृहमंत्री के विसंगत वक्तव्य के बाद एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता ने तत्काल प्रश्न किया कि क्या यह विस्फोट आपकी सरकार द्वारा प्रायोजित नहीं था? इस जलते हुए प्रश्न का उत्तर था सरकारी-मौन एवं लाशों का मुआवज़ा....!

●● **ट्रायल डेथ :** बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा बनायी गयी दवाओं के परीक्षण हेतु गरीब देशों के लोग (मरीज) आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। आश्चर्य होता है कि इस परीक्षण-मृत्यु के आसान शिकार हम भी हैं और बिना किसी मुआवज़े के सरकारी-अनुमोदन की किश्त में लगभग तीन सौ मरीज़ प्रतिवर्ष मारे जा रहे हैं और हमारी ही चुनी हुई सरकार निवेश की किश्तों में लाशों का कफन खरीद रही है।

●●● **विश्व-पुस्तक-मेला :** गत वर्ष 20वें विश्व-पुस्तक-मेले में यह मेला प्रतिवर्ष आयोजित करने का संकल्प लिया गया था तदनुसार इस बार दिल्ली के प्रगति मैदान में 21वाँ विश्व-पुस्तक-मेला आयोजित किया गया। अब तक यह आयोजन द्वि-वार्षिक रहा है जिससे लेखकों-प्रकाशकों-पाठकों में एक प्रतीक्षापरक-उत्साह बना रहता था। किन्तु इस महत्वपूर्ण आयोजन को प्रतिवर्ष किये जाने से यह भी एक 'रूटीन' बनकर रह जायेगा, न तो गुणवत्तापूर्ण लेखन सामने आयेगा न-ही वह उत्साह कायम रह सकेगा। विश्व पुस्तक मेले की प्रतिष्ठा, गरिमा एवं सार्थकता इसके द्विवार्षिक आयोजन से ही स्थापित हो सकती है क्योंकि इन दिनों देश की राजधानी दिल्ली (जहाँ विश्व पुस्तक मेला आयोजित होता है) सहित लगभग प्रत्येक प्रमुख नगर में पुस्तक-मेलों का अनवरत वार्षिक आयोजन होता ही रहता है, इस परिदृश्य में यदि विश्व-पुस्तक-मेला भी वार्षिक-रूटीन बन जायेगा तो डर है कि कहीं 'विश्व' पुस्तक मेले से अन्य रूटीन मेलों के इतर विशिष्ट गुणवत्ता की आस लगाये विशिष्ट गुणी-सुधी-पाठक ही आकाश-कुसुम की तरह अदृश्य न हो जायें। फिर तो कहना ही होगा कि—'गुन न हेरायो, गुनगाहक हेरायो है।'

इन्हीं शब्दों के साथ वासंती रंगों-गुलाल में रची-बसी होली की बधाईयाँ...!

केसर रंग रंगे आँगन, टेसू के फूलों से पीले;
किरण उतर कर नभ से आयी, आज खेलने को होली।

—परागकुमार मोदी

विचारों के वृक्ष

पढ़ते बढ़ते वह एक जगह पर रुक गए। वहाँ विचारों की तुलना बलूत के पेड़ से की गई थी। मजेदार तो लगा, लेकिन वह यह भी समझ गए कि **इसमें जीवन का एक गहरा सन्देश छिपा है।** लिखा था, हर साल बलूत के पेड़ से अनगिनत फल गिरते हैं। अगर इन फलों के सभी बीज उग आएं, तो कुछ ही साल में बलूत का जंगल तैयार हो जाए। लेकिन ऐसा नहीं होता। ज्यादातर बीज या तो गिलहरियाँ खा जाती हैं या कठोर सतह पर उग नहीं पाते। ऐसा ही विचारों के साथ है। एक-दो ही कामयाब होते हैं।

विचार नश्वर हैं। वे नष्ट होते रहते हैं, बशर्ते कि हम इन्हें मुट्ठी में कैद न कर लें। मुट्ठी में कैद होते ही यह उत्पादक हो जाता है, अन्यथा इसका कोई मोल नहीं रहता। अभिनेता अनुपम खेर कहते हैं, मैंने इस सच को जीवन में उतार लिया है, मेरे मन पर एक नाटक के उस सीन ने गहरा असर किया, जिसमें रावण मृत्यु-शय्या पर हैं और राम-लक्ष्मण उनसे कोई शिक्षा देने का आग्रह करते हैं। इस पर रावण उनसे कहते हैं कि 'मन में कोई अच्छा विचार आए, तो उस पर फौरन अमल करो।' अनुपम खेर कहते हैं कि इसके बाद रात के दो बजे भी कोई अच्छा विचार पनपे, तो मैं उस पर या तो अमल करता हूँ या फिर लिख लेता हूँ।

विख्यात अफ्रीकी लेखिका एलिस वॉकर कहती हैं कि विद्वता कुछ और नहीं, अपने विचारों को पकड़ने और उसके दोहन की काबिलियत है। दोहन का अर्थ है—उसकी देखभाल करना, उसे पल्लवित-पुष्पित करना और उससे वह हासिल करना, जो मानवता के लिए जरूरी है। दुनिया में कोई ऐसा नहीं, जिसके पास विचार न हों, फिर क्या कारण है कि विचारक गिने-चुने ही होते हैं? दरअसल, ज्यादातर इसे मुट्ठी में कैद नहीं करते, इसके विभिन्न पहलुओं की जाँच नहीं करते, इससे जुड़ी चीजों का अध्ययन नहीं करते। ये बलूत के वही बीज हो जाते हैं, जो अंकुरित नहीं हो पाते।

आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

यदि भारत की जनता को, भारतीय संस्कृति को, भारतीय वर्चस्व को जीवित रहना है तो शासन में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रश्न है कि कहाँ आवश्यकता है? तो उसका उत्तर है—सर्वत्र! फिलहाल सार्वत्रिक परिवर्तन एक साथ तो हो नहीं सकता, अत: उसका एक क्रम निश्चित करना होगा। चूँकि समूचा राष्ट्र विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में विभक्त है, अतएव परिवर्तन विधायिका-संस्था से प्रारम्भ होना चाहिये। हमने देख लिया है कि शासन की हमारी तीनों ही संस्थाएँ पटरी से उतर चुकी हैं। प्रतिशत का अन्तर हो सकता है, परन्तु किसी की भी भ्रष्टता में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता है। **विधायिका** को ही लें। राजनीति में घुसे एम०एल०ए०, एम०पी० तथा मंत्रीगण देश को यह क्यों नहीं बताते कि उन्हें दो-चार वर्षों में ही यह बेशुमार दौलत कहाँ से मिली? तुम्हारे बाप-दादों को तो ठीक से दो जून की रोटी भी नहीं मिली, खुद चुनाव लड़ने से पूर्व तुम भी दर-दर की ठोकरें ही खाते रहे! अब यह जो घी-दूध की नदियाँ बहने लगी हैं, यह जो तुम लाखों, करोड़ों, अरबों के मालिक बन बैठे हो कुछ ही वर्षों में, इसका रहस्य क्या है? यदि तुमने राष्ट्र की सम्पत्ति नहीं डकारी, धन्धेबाजी नहीं की, पाप-मार्ग नहीं अपनाया तो यह सम्पत्ति आई कहाँ से? यह समस्या विदेशों में तो नहीं है।

चलो, मैंने मान लिया कि तुमने गजब की चालाकी बर्ती। कहीं कोई प्रमाण नहीं छोड़ा अपने भ्रष्टाचार का। जहाँ कहीं पैबन्द लगे भी थे, चद्दर के उस हिस्से को ही फाड़ दिया। पुलिस, थाना, सतर्कता-विभाग, सी०बी०आई०—किसी की भी पकड़ में आने लायक तुम नहीं रहे। इस विलक्षण निर्भयता के लिए तुम्हें लाख-लाख बधाइयाँ! फिर भी मैं राष्ट्र की ओर से मात्र दो सवाल तुमसे पूछना चाहता हूँ—

1. एक तो यह कि क्या तुम सौ साल से भी अधिक जीने की उम्मीद करते हो? या फिर मात्र साठ, सत्तर, अस्सी जैसी आम आदमी की उम्र ही?

2. दूसरा सवाल यह है कि तुम अपनी देह में किसी **आत्मा** का अनुभव करते हो या नहीं?

यदि ये दोनों सवाल तुम्हारी समझ में आते हों तो तुम्हें अपने ओछेपन का बोध स्वयमेव हो सकता है। क्योंकि राष्ट्र के साथ, समाज के साथ विश्वासघात कर जो आर्थिक भ्रष्टाचार तुम साठ-सत्तर की उम्र में कर रहे हो उसे भोगने का समय ही तुम्हारे पास कहाँ है? इकट्ठा करते ही करते तो तुम 'टें' हो जाओगे, मुँह में कालिख पुतवा कर।

दूसरी बात यह कि बचाव का सारा षड्यंत्र करने के बावजूद, रात में जब तुम्हारी आत्मा तुम्हारे मुँह पर खखार कर थूक देती है, तुम्हें तुम्हारे सारे पापों, षड्यंत्रों, जघन्य अपराधों, विश्वासघातों, राष्ट्रद्रोहों तथा राक्षस-व्यवहारों का स्मरण करा देती है तो तुम सो कैसे पाते हो? गजब का '**बज्जर का कलेजा**' है तुम्हारा! तुम जैसे आततायी रावण को जन्म देने वाली माता 'केकसी' को प्रणाम है।

ऐसे तुम 'एक' नहीं हो। तुम 'रक्तबीज' खानदान के हो। बस, चुनाव जीतने भर की देर है। उसके बाद तो सब तुम्हारे ही रंग में रँग जाते हैं। पार्टी कोई भी हो—कुर्सी हथियाने, दल बदलने, स्वार्थपूर्ति न होने पर नई पार्टी गठित करने की '**बनर भभकी**' देने, पार्टी-गठन का नाटक करने और कुछ महीने-साल, लात खाने तथा बेनामी की अमावस्या में डूबने के बाद पुन: सनम की गली में बिन बुलाये चहलकदमी शुरू कर देने तथा यशवन्त, उमा भारती एवं बुढ़ऊ जेठमलानी की तर्ज पर पुन: घर में घुस आने की (चौंसठ कलाएँ तो बेकार सिद्ध हो गईं) **पैंसठवी** कला में आप सब एक जैसे हो। राष्ट्र को बताओ तो सही कि निकाले क्यों गए थे? और पुन: लिए क्यों गए?

आपको ईमानदारी, समाजहित, राष्ट्रभक्ति, न्याय तथा सुशासन की अद्भुत चिन्ता सताती है—जब प्रदेश में आपके विरोधी दल की सरकार होती है। तब आप, **वही आप** जिसे अपनी रिजीम में **बेल** के आकार वाले भी अपने भ्रष्टाचार विरोधियों के शोर-शराबे के बावजूद समझ में नहीं आये थे, **वही आप** विरोधी सरकार की **सरसों** जैसी नन्हीं गल्तियों को भी पकड़ने लगते हैं। तब आप जैसा राज्य-भक्त, समाजभक्त, राष्ट्रभक्त, न्यायभक्त कोई और होता ही नहीं। तब आप सी०बी०आई० द्वारा मामला उभरने के भय से **गधे को भी बाप** कहना प्रारम्भ कर देते हैं। गो कि आप की इस **मिथ्या प्रसवपीर** इस घड़ियाली अश्रु का जनता पर तिलभर भी असर नहीं पड़ता क्योंकि पाटे के नीचे दबे मेंढक की तरह वह आपके शासन की यंत्रणा भोग चुकी है।

जैसा मैंने कहा कि चरित्र आप सबका लगभग एक सा ही है। अन्ना हजारे के जन-लोकपाल आन्दोलन तथा बाबा रामदेव के विदेशी बैंक में सञ्चित भ्रष्टसम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण-आन्दोलन में सारा राष्ट्र आपको नंगा देख चुका है। जिसमें केवल राष्ट्र का हित हो, केवल जनता का हित हो (आप का नहीं) वह प्रस्ताव आप भला कैसे मान सकते हैं? आप तो राजनीति में घुसे ही हैं मात्र इस उद्देश्य से कि (1) राष्ट्र के साथ ही साथ आप का भी हित हो, अथवा (2) राष्ट्र का हित हो या न हो, परन्तु आपका तो हित हो, अथवा (3) राष्ट्र या समाज (साला) भाड़ में जाय, परन्तु आपका तो हर हालत में हित हो। अब इन तीनों विकल्पों के नामज़द उदाहरण भी मैं दे सकता हूँ, परन्तु उससे लाभ क्या होगा?

गाँव में जब किसी बड़े-बूढ़े का मरना सुनिश्चित हो जाता है तो लोगों में कानाफूसी प्रारम्भ हो जाती है—'**सुना है, फलाने अधोगे हैं। चलो, एक बार देख आयें, पता नहीं कब दम तोड़ दें!**' बस, इसी भाव से (न कि आत्मीय सदाशयता वश) आप में से कुछेक अन्ना और रामदेव के मञ्च पर भी हो आये। आपको दृढ़ विश्वास था कि दो-चार दिन में वे दम तोड़ देंगे। आप उन्हें अपना समर्थन देने, जीवन देने नहीं गये थे, मात्र अपना 'भेख' मिटाने गये थे। वस्तुत: आप शासन से भी कहीं अधिक चाहते थे कि 'इस बुढ़वा का नाटक खत्म हो जाय।' और फिर, आप जैसे तपस्वियों का संकल्प व्यर्थ क्यों होता? अन्ना और रामदेव—दोनों का तम्बू उखड़ ही गया।

यह आपकी जातीय एकता आपके राजनैतिक चरित्र और आपकी लोकतांत्रिक मानसिकता की अद्भुत मिसाल है। देवता और दैत्य होने (शासन एवं विरोधपक्ष) का तो आप मात्र अभिनय कर रहे हैं, जनता को रिझाने के लिए! आप शासन के विरोधी हो भी कैसे सकते हैं? विरोधपक्ष तो आपको जबर्दस्ती कहा जा रहा है क्योंकि आपकी सरकार नहीं बन पाई! इतनी मात्रा में आपकी जीत नहीं हो पाई कि आप सरकार बना पाते! शायद खरीद-फरोख्त का टोटका भी काम नहीं आया, अन्यथा क्या आप बाज आते वह सब करने से? अब, जब सारे **जतन अकारथ** चले गये, तब तो अगत्या विरोध-पक्ष में बैठना ही था।

परन्तु विरोध पृथक् कुर्सियों पर बैठने मात्र से थोड़े न होता है? विरोध होता है सैद्धान्तिक टकराव से! मानसिक आस्था के विसंवाद से। विरोध इतने भर से नहीं होता कि शासन द्वारा घोषित **आम** को आप **इमली** कहें। शासन के **उत्तर** को आप **दक्षिण** कहें। देवता और दैत्य होने का मूल कारण भी आप दोनों की जन्मदात्री माताओं (पार्टियों) का अलगावमात्र है। एक की माता **अदिति** है तो दूसरे की **दिति**। परन्तु बाप तो आप दोनों के एक ही हैं न—**महर्षि कश्यप**! अतएव आप दोनों का रक्तसम्बन्ध या चरित्र एक ही है। वस्तुत: आप दोनों गरीब जनता को बारी-बारी से वेश्या की तरह भोग रहे हैं। उसका उद्धार करने, उसकी माँग में सिन्दूर भरने उसे सौभाग्यवती बनाने की मंशा, आप दोनों में से, किसी की भी नहीं है।

गरुड़पुराण में जिन रौरव, कुम्भीपाक, लालाभक्ष तथा असिपत्र आदि सत्ताईस नरकों का वर्णन किया गया है, उन्हें आप ने अपने हुनर से भारत में सदा-सदा के लिये स्थापित कर दिया है। अब उन नरकों का भय मनुष्य को, मरने के

बाद नहीं प्रत्युत जीवनकाल में ही है। ब्यूरोक्रैट अधिकारी तथा समूची दण्डव्यवस्था पर आपका एकच्छत्र अधिकार है। आपके भृकुटि-विलास मात्र से थाने में प्राथमिकी नहीं दर्ज की जाती। और क्या-क्या नहीं होता अथवा होता है, इसका विवरण दूँगा तो किताब बन जायेगी।

परन्तु इतना तो तय है कि जो आचरण-संहिता-गंगा आपके आचरणों के गोमुख से जनमी है वह वेद, बाइबिल, कुरान तथा गुरुग्रन्थ साहिब—चारों से विलक्षण है। वह आचरणसंहिता इतनी मनभावन, धन कमावन तथा मौजमारन—टाइप है कि राष्ट्र का हर नवयुवक बस, आपके ही पावन पदचिन्हों पर चलना चाहता है। क्योंकि क्लर्क या टीचर बनने में तो उसकी आधी उम्र चली जायेगी। फिर भी सुख-सुविधा के लाले पड़े ही रहेंगे। परन्तु आप वाला उन्नतिपथ अत्यन्त सस्ता, मजबूत और टिकाऊ है। इस पथ से तो अपना ही नहीं, समूचे कुनबे का उद्धार किया जा सकता है।

जिन्होंने भारत में अंग्रेजी शासन के दो-तीन दशक देखे हैं, ऐसे लोगों की संख्या अब कम ही है। मैं स्वयं भी पराधीन भारत में ही पैदा हुआ। परन्तु अपने जीवन की मात्र चार वर्षों की पराधीनता का वह जीवन्त-संस्मरण मैं आज भी भूल नहीं पाता जब घनी अँधियारी रात में इलाके का 'गोड़इत' (गाँव का चौकीदार) अपनी लाठी पटकता, गाँव को सावधान करता—जागते रहोऽऽऽऽऽ।

हम लोग डर के मारे माँ की छाती से चिपट जाते थे। सिपाही का गाँव-गिराँव में दिखाई पड़ जाना मानो पुच्छलतारे का उदय होना था। सारा जवार भयभीत हो उठता। अपराध का कहीं नामो निशान तक नहीं था। जितना भय आज के मुकदमेबाजों को बदमिजाज जज से होता होगा उससे कहीं दस गुना भय, मेरे बचपन में बरजी गाँव के **ठा० मँगरू सिंह** से था लोगों को। पंचायत में आते मँगरू सिंह का नाम सुनते ही भयावह अपराधियों की भी धोती गीली हो जाती थी। सभी जानते थे कि ठा० मँगरूसिंह किसी के भी सगे नहीं हैं। वह दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे। यही चरित्रबल था ठा० मँगरू सिंह का कि हर व्यक्ति **एक उन्हें** पंचायत में अनिवार्यत: बुलाने के पक्ष में रहता था।

ठा० मँगरू सिंह के बारे में एक विशेषण प्रचलित था कि उनके जैसा कोई और 'कहुआ' जवार में है ही नहीं। 'कहुआ' अवधी बोली का शब्द है जिसका अर्थ है—मुँहफट्ट अथवा निर्भय वक्ता। मँगरू सिंह निर्भय वक्ता थे, न्यायानुकूल वक्ता थे।

ठा० मँगरू सिंह का भारत दो-तीन दशकों में ही बदल गया। इलाहाबाद में बी०ए० एम०ए० (1960-64) करते समय, पूरे शहर में दो-तीन हाईकोर्ट के चोटी के वकीलों के बारे में खुली चर्चा होती थी कि उनकी राय से ही लोग कत्ल करके मुकदमा लड़ने आते थे। इस कार्य के लिए वे मोटी रकम लेते थे तथा जजों को उनका हिस्सा देकर, अभियुक्त को बरी करा लेते थे। इन तथ्यों में कितनी सच्चाई थी, ईश्वर जाने। परन्तु जजों और वकीलों के वे रहस्यमय सम्बन्ध आज भी बरकरार हैं। आज भी कुछ कोर्टों में कुछ वकीलों की मार्फत जाना 'श्योर सक्सेस' का पर्याय माना जाता है।

अंग्रेजी शासन वाले बचे-खुचे लोग आज साफ-साफ अनुभव कर रहे हैं कि स्वतन्त्रता सचमुच 1947 के पूर्व ही थी, जबकि समाज में न्याय प्रतिष्ठित था, लोगों को अपराध का, दुष्कर्म का भय था, और सद्गुणों का समाज में समादर था। किस थानाध्यक्ष से गुहार करने जाइयेगा? वह तो स्वयं मुहल्ले के गुण्डे के साथ मसखरी करता चाय पी रहा है। किस न्यायालाय और न्यायधीश से त्राण की आशा करियेगा जहाँ मोटी रकम देकर आपको बचाने वाली फाइल ही गायब कर दी गई हो और जज इसकी कोई जिम्मेदारी ही न ले रहा हो। जहाँ दुर्भाग्य से संकटग्रस्त हों आप तथा विरोधी वकील यह घटिया तर्क दे रहे हों कि हजूर! यूनिवर्सिटी के वाइसचांसलर रहे हैं, करोड़ों रुपये कमा चुके हैं। दो चार लाख हमारी मुवक्किल को भी मिल जायेगा तो क्या हर्ज होगा? और सचमुच इलाहाबाद की लोअरकोर्ट के एक जज ने ऐसा ही कमाल किया।

1947 के अनन्तर जो **स्वदेशी** पराधीनता जनमी है वह विलक्षण है। पूर्ववर्ती पराधीनता में, भारतीय जनता का मात्र स्थूल स्वरूप ही परतन्त्र था, उसकी अन्तश्चेतना पूर्णत: स्वतन्त्र थी। जलियाँवाला बर्बर हत्याकाण्ड तथा वीर भगत सिंह आदि की शहादतों ने भी उस अन्तश्चेतना को परतन्त्र नहीं बनाया। परन्तु 1947 के बाद की स्वतन्त्रता ने भारतीय जनता की अन्तश्चेतना को ही पराधीन बना लिया है। जनता का स्थूल रूप ही स्वतन्त्र है आज, आत्मा नहीं। और यह सब कुछ हमारे अन्धे, बहरे और लँगड़े लोकतन्त्र की देन है। अपनी ही सन्तान यदि माँ-बाप का जीना दूभर कर दे तो किससे शिकायत करेंगे आप?

पशुओं को लेकर हमने कितने ही मुहावरे बना डाले अपनी श्रेष्ठता की ऐंठ में—पाशविक प्रवृत्ति, पशुता की हद, पशुओं के समान जड़! परन्तु ठंडे दिल से सोचें—क्या हम पशुओं की श्रेष्ठता तक पहुँच सके हैं? कोई पशु पेट भरा होने पर रस्सी नहीं तुड़ाता। वह हर समय काम करने को तैयार करता है। गधा कभी नहीं कहता कि वह आज बेहद थका है, बोझा नहीं ढोयेगा। ऋतुगन्ध पहचान कर ही पशु सम्पर्क करता है। प्राय: सम्पर्क-वेला में कुछ और भी मादाएँ उन्मत्त हो उठती हैं। परन्तु नर उन सबको दूर खदेड़ देता है। किसी अन्य नर से सम्पर्कित काम्य मादा को द्वेषवश बलवान् नर मार नहीं डालता। हाँ, वह भोक्ता नर के साथ हिंसा कर सकता है, परन्तु मादा की प्रत्येक स्थिति में रक्षा ही करता है।

अब इन आचरणों के आलोक में पतित मनुष्य का आकलन करें! दो-ढाई वर्ष की बच्चियाँ तक उसकी घृणित वासना से मुक्त नहीं। जिस नारी को भोगना, उसी को क्रूरतापूर्वक मार डालना? हद हो गई मानवता के पतन की। यह कैसा शासन है? कैसा नपुंसक दण्डविधान है कि किसी को अपराध से भय नहीं है।

दामिनी काण्ड ने राष्ट्र के मुँह पर ऐसी गहरी कालिख पोती है जो कभी छूटने वाली नहीं। किसी भी सुधार से इस जघन्य अपराध का प्रायश्चित्त सम्भव नहीं। प्रायश्चित्त का एक ही उपाय शेष है—शासन के ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन! यह परिवर्तन विधायिका से ही प्रारम्भ होना चाहिये। परन्तु कठिनाई यही है कि **परिवर्तन का अधिकार जिसके हाथ में है उसी को परिवर्तित होना है। वह भला क्यों परिवर्तित** होना चाहेगी?

विधायिका-परिवर्तन की दूसरी क्षमता सेना के हाथ में है। परन्तु सेना तो पहले से ही शासन की दबैल होने का विलाप कर रही है। पाकिस्तानी दरिन्दे भारतीय जवान का सिर काट कर ले जा रहे हैं और सेना कह रही है कि हमें गोली चलाने का हुक्म ही नहीं है?

तो क्या इंग्लैण्ड-अमेरिका के वजन पर राष्ट्रपति-प्रणाली का शासन भारत में न्यायपालिका के किसी आदेश से सम्भव है? क्या न्यायपालिका एवं सेना कभी एक हो सकते हैं? हों या न हों, यह और बात है। परन्तु आमूलचूल परिवर्तन इसी स्थिति में सम्भव हो सकता है। जिस दिन ऐसा होगा वही दिन भारत का वास्तविक पन्द्रह अगस्त होगा।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

भारतीय रहस्यवाद

राधेश्याम दूबे

वस्तुत: भारतीय अध्यात्मविद्या अथवा ब्रह्मविद्या ही भारतीय रहस्यवाद है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में रहस्यवाद के अर्थ में अध्यात्मविद्या, ब्रह्मविद्या, उपनिषद्, गुह्यविद्या, गुह्यमार्ग आदि शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। योग, भक्ति, कर्म और ज्ञान—ये भारतीय अध्यात्मसाधन के प्रधान उपाय हैं। अत: साधन की दृष्टि से विचार करते हुए लेखक ने भारतीय रहस्यवाद को चार भेदों में विभक्त कर (जैसे—योगपरक रहस्यवाद, भक्तिपरक रहस्यवाद, ज्ञानपरक रहस्यवाद, कर्मपरक रहस्यवाद) उनकी व्याख्या की है। भारतीय रहस्यवाद का विकासात्मक स्वरूप प्रस्तुत करते हुए विद्वान् लेखक ने उसके तात्त्विक स्वरूप की विवेचना की है।

आकार डिमाई *पृष्ठ* 172

सजिल्द : 978-81-7124-894-0 • रु० 200.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

भारतीय रहस्यवाद का परिचय

भारतीय धर्म-दर्शन की परम्परा निगमागममूलक है। निगम के अन्तर्गत वेदों की गणना की जाती है तथा आगम को तंत्र के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय धर्म, दर्शन एवं सभ्यता निगम पर आश्रित है तथा साथ ही आगम पर भी अवलंबित है। निगम (वेद) से कर्म, उपासना और ज्ञान के स्वरूप का बोध होता है तथा आगम इनके साधनभूत उपायों की शिक्षा देता है। जिस शास्त्र द्वारा भोग और मोक्ष के उपाय बुद्धि में आते हैं वह आगम कहलाता है। तंत्र अपने व्यापक अर्थ में शास्त्र, सिद्धान्त, अनुष्ठान, विज्ञान, विज्ञान विषयक ग्रंथ आदि का बोध है। इस व्यापक अर्थ में शास्त्र में तंत्र शब्द बहुश: प्रयुक्त होता है। यों आगम एवं निगम का परस्पर सम्बन्ध निर्धारित करना एक झमेले का विषय है, किंतु सामान्यत: यह कहा जाता है कि अधिकांश आगमों का मूलाधार निगम ही है। तन्त्र दो प्रकार के बताये गये हैं—वेदानुकुल और वेदबाह्य। वेद ही कुछ तंत्रों के सिद्धान्त तथा आचार के मूल स्रोत हैं। पांचरात्र तथा शैवागम के कुछ सिद्धान्त वेदमूलक हैं, लेकिन प्राचीन ग्रन्थों में इन्हें वेदबाह्य कहा गया है। शाक्तागम की वेदानुकूलता के सम्बन्ध में लोग सन्देह करते हैं जिसका कारण है शाक्तों के सप्तविध आचारों में से मात्र एक ही आचार-वामाचार की घृणित पूजापद्धति। लेकिन शाक्तों के आचार एवं सिद्धान्त के अनुशीलन से स्पष्ट है कि उनमें भी महती संख्या वेदानुकूल तन्त्रों की है। किन्तु अपने विवेच्यकाल तक की वेदबाह्य और वेदानुकूल संप्रदायों की विविध प्रवृत्तियों का यदि विश्लेषण किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि विविध सम्प्रदायों ने एक दूसरे को हीन और निन्दनीय ठहराने के लिए भी उन्हें वेदबाह्य घोषित किया है। इसी प्रकार ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान एवं प्रतिष्ठाकाल में विभिन्न वेदबाह्य संप्रदायों ने अपनी वेदानुकूलता सिद्ध करने के लिए भी अनेक प्रमाण जुटाये हैं। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी ''मध्यकालीन धर्मसाधना'' नाम की पुस्तक में इस पर विस्तार से विचार किया है।

भारतीय दर्शन आस्तिक तथा नास्तिक दो विभागों में विभक्त किये जाते हैं। सामान्यत: जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है वह आस्तिक है तथा जो ईश्वर की सत्ता का निषेध करता है वह नास्तिक है। इस दृष्टि से जैन, बौद्ध, चार्वाक् दर्शन नास्तिक कहे जाते हैं। पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' में लिखा है—''अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य स आस्तिक:'' अर्थात् परलोक की सत्ता में विश्वासशील पुरुष आस्तिक है। इस दृष्टि से जैन एवं बौद्ध दर्शन भी आस्तिक माने जाने लगेंगे, क्योंकि परलोक की सत्ता में इनका पक्का विश्वास है। पाणिनि की व्याख्या के अनुसार चार्वाक् दर्शन नास्तिक माना जायेगा। मनु के अनुसार वेद-निन्दक नास्तिक है—''नास्तिकों वेद-निन्दक:''। इस प्रकार आस्तिक वह है जो वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करे तथा नास्तिक वह जो वेद की प्रामाणिकता में विश्वास न कर वेद की निन्दा करे। वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करने के कारण न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त प्रधानतया आस्तिक दर्शन कहे जाते हैं। वेद की प्रामाणिकता को अस्वीकार करने के कारण चार्वाक्, जैन एवं बौद्ध नास्तिक कहे जाते हैं। चार्वाक् दर्शन सब दृष्टि से ईश्वर, वेद, एवं परलोक न मानने के कारण ही पक्का नास्तिक है।

भारतीय संस्कृति वेदमूलक है। यों बाद में भारतभूमि पर ही ऐसे धर्म-सम्प्रदाय विकसित हुए जिन्होंने वेदों को अपने आचार-विचारों का आधार नहीं माना। जैसे जैन और बौद्ध धर्म वेद को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करते, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है, फिर भी भारतभूमि पर उत्पन्न एवं विकसित होने के कारण ये भारतीय आचार-विचार से नितान्त भिन्न नहीं है। ये वेद विरुद्ध भले ही हों, परन्तु भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता से अभिन्न हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि वैदिक आचार-विचारों का प्रतिबिम्ब इनमें भी स्पष्टत: दिखायी देता है। अत: भारतीयों की संस्कृति मूलत: एक ही है और वह है वेदमूलक संस्कृति। यह बात दूसरी है कि वर्तमान भारत में मुस्लिम और ईसाई बन्धु भी निवास करते हैं जिनकी संस्कृति वैदिक संस्कृति से भिन्न है। भारत में उनका निवास भले ही चिरकालिक है और ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृति के नाम से नहीं जाना जा सकता। वे तो मूलत: अपने प्राचीन स्थान अदन आदि की संस्कृति के अनुयायी हैं। इस प्रकार मुस्लिम और ईसाई-धर्म भारतीय धर्म अथवा संस्कृति के अन्तर्गत ग्राह्य नहीं हैं।

भारतीय संस्कृति का मूलभूत स्वरूप अध्यात्म प्रवीणता है। इसका तात्पर्य यह है कि पंचभूतों से निर्मित शरीर के अतिरिक्त एक आत्मा की सत्ता मानी गयी है, जो अजर-अमर है, शाश्वत है तथा भौतिक शरीर बदलता रहता है। आत्मा का स्वरूप सर्वदा एक बना रहता है। वर्तमान शरीर के नष्ट होने पर आत्मा दूसरे शरीर को ग्रहण करती है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति पुनर्जन्मवाद को प्रश्रय देती है, जिससे भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत आने वाले बौद्ध, जैन धर्म आदि सभी स्वीकार करते हैं। इस प्रकार के अध्यात्म पर भारतीय आचार-विचार अवलंबित हैं।

डॉ० सुरेन्द्रनाथ दासगुप्त ने अपने ग्रंथ 'हिन्दू मिस्टिसिज्म' में याज्ञिक रहस्यवाद की विवेचना की है जिसे भारतीय रहस्यवाद का मूल उत्स माना जा सकता है। इसके साथ ही उन्होंने रहस्यवाद के चार प्रमुख प्रकारों-औपनिषद रहस्यवाद, योगपरक रहस्यवाद, बौद्ध रहस्यवाद एवं भक्तिपरक रहस्यवाद की विधिवत् चर्चा की है। उनकी दृष्टि में हिन्दू रहस्यवाद (हिन्दू मिस्टिसिज्म) और भारतीय रहस्यवाद (इंडियन मिस्टिसिज्म) शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं—'हिन्दू स्टैडिंग फार इंडियन'।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

साहित्योत्सव : जयपुर

जहाँ साहित्य कॉरपोरेट क्षेत्र के साथ खड़ा था

जयपुर में जैसे सचमुच का मेला लगा था। दिग्गी पैलेस के बाहर सड़क तक लम्बी-लम्बी कतारें थी, उनके इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में पुलिस। बाहर ट्रैफिक जाम था। और सड़क से लेकर आयोजन स्थल तक हरी, गुलाबी, पीले रंग की रंगोलियाँ सजी थीं। हजारों की भीड़, उसमें भी युवा चेहरे सबसे ज्यादा। लड़के, लड़कियाँ, बच्चे-बूढ़े, रजिस्ट्रेशन काउंटर पर लम्बी-लम्बी लाइनों में अपनी बारी के इंतजार में खड़े थे। चारों तरफ युवाओं की इतनी भीड़ कि पांव रखने को जगह नहीं। पाँच दिन के जयपुर साहित्य उत्सव का यही नजारा था। इतना ही नहीं, साहित्य, संस्कृति, राजनीति और ललित कलाओं से जुड़े सेमिनारों के पंडालों में धैर्य से सुनते अपार लोग भी थे। चाहे वह गॉड एज पॉलिटिकल फिलास्फर हो, राइटर ऐंड स्टेट, ओ टु लिव अगेन, भाषा और भ्रष्टाचार, अधूरा आदमी अधुना नारी या नॉवेल आफ द फ्यूचर हो, सभी में बड़े-बड़े पंडालों में जितने लोग कुरसियों पर बैठे थे, उतने ही लोग खड़े थे। किसी साहित्य से जुड़े उत्सव में इस तरह का नजारा देखना अद्‌भुत अनुभव था। सम्मेलन पर अंग्रेजीदा होने का आरोप न लगे, इसलिए उद्‌घाटन समारोह में हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों में ही भाषण हुए।

इस उत्सव में सबसे अलग बात लगी इसमें विभिन्न कॉरपोरेट समूहों की भागीदारी। साहित्य से जुड़े तमाम बहस-मुबाहिसों में अक्सर कॉरपोरेट और बड़े घरानों की आलोचना होती रहती है। उसे ही साहित्य और समाज का सबसे बड़ा विरोधी मान लिया जाता है। आम तौर पर कॉरपोरेट से जुड़े किसी भी कला-संस्कृति के आयोजन को जन-विरोधी बता दिया जाता है, इस तर्क के आधार पर कि कोई भी पैसा बिना अपनी शर्तों के नहीं आता। इसीलिए यदि कोई बड़ा घराना साहित्य-संस्कृति से जुड़ा कोई आयोजन करा रहा है, तो जरूर उसमें उसके ही कुछ हित सध रहे होंगे।

लेकिन जयपुर में साहित्य और कॉरपोरेट का मेल अनोखा लगा। यहाँ टाटा स्टील का पण्डाल सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण था, जिसका स्लोगन भी जैसे महोत्सव के बारे में ही कह रहा था—वैल्यूज स्ट्रॉन्गर दैन स्टील। इसके अलावा गूगल, एयरटेल, कोका कोला, हिन्दुस्तान टाइम्स, वोडाफोन, इनक्रेडेबिल इंडिया, हारवर्ड युनिवर्सिटी प्रेस के साथ बहुत से ब्राण्ड ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। लेकिन इन ब्राण्ड ने लेखकों, श्रोताओं को सुविधाएँ उपलब्ध कराने और आयोजकों को आर्थिक मदद देने के अलावा किसी के विचार पर शायद ही कोई शर्त लगाई। हाँ, कार्यक्रमों की शुरुआत और अन्त में इन घरानों से जुड़े विज्ञापन जरूर दिखाए जाते रहे। साहित्य और कॉरपोरेट का इस तरह का अनोखा मेल पहली बार देखने को मिला। हम यह सोचते हैं कि कॉरपोरेट की उपस्थिति मात्र से साहित्य भ्रष्ट हो जाता है, उस पर शायद फिर से सोचने की जरूरत है। इसे लेकर वहाँ के माहौल में कोई आपत्ति भी नहीं थी, शायद इसकी जरूरत को साहित्य वालों ने स्वीकार कर लिया है।

—हिन्दुस्तान से साभार

इस बार जयपुर साहित्य उत्सव का आरम्भ दलाई लामा और महाश्वेता देवी के उद्‌बोधन से हुआ। धर्मगुरु दलाई लामा ने अपनी नम्रता, सादगी और सीधे-सादे तरीके से अपनी बात कह, जनता का मर्म छू लिया। सदा की तरह उनका संदेश नैतिक मूल्यों के बारे में था। उधर महाश्वेता देवी अशक्त लेकिन जीवन्त दिखीं। उनकी आवाज में वही ओज, वही निर्भीक चुनौती और जीवन के सम्मान का आग्रह था, जो उनकी विशिष्ट पहचान है। सदा की तरह उन्होंने आदिवासियों, सताए हुए पीछे छूटे हुए लोगों की बात की। पहले दिन से ही हर सत्र में खड़े रहकर अपने मनपसंद लेखक को सुनने वालों की भीड़ थी। पूँजीवाद के ह्रास पर चर्चा है। गणतन्त्र की उपलब्धियों, असफलताओं पर बहस है। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिस पर कोई चर्चा न हो रही हो। ऐसे अच्छे वक्ताओं को एक ही स्थान पर सुन पाने का सुअवसर कोई नहीं छोड़ना चाहता। छात्र भी हैं और अन्य जन भी।

मुस्लिम संगठनों और भाजपा युवा मोर्चा के विरोध के बीच शुरू हुए जयपुर साहित्य उत्सव में देश-विदेश से आए बुद्धिजीवियों व साहित्यकारों ने एक सुर में कहा कि कला से विवाद जोड़ना बिल्कुल गलत है। उद्‌घाटन समारोह में राजस्थान की राज्यपाल मार्ग्रेट आल्वा ने कहा कि सम्मानित अतिथि मंथन करें कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और भावनाओं को आहत न होने के बीच किस प्रकार से संतुलन कायम किया जाए। यह उत्सव अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का सुनहरा मौका है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि साहित्योत्सव में आने वाले पाकिस्तानी साहित्यकारों का विरोध ठीक नहीं है। फेस्टिवल में शामिल होने आए ब्रिटिश उपन्यासकार टॉम हॉलैंड का मानना है कि किसी भी दो देशों के बीच चलने वाले विवाद या युद्ध का असर कला और कलाकारों पर नहीं पड़ना चाहिए। उपन्यासकार तरुण तेजपाल ने भी देश में पाकिस्तानी कलाकार और साहित्यकारों को लेकर उठने वाले विरोध को गलत माना है। किसी भी साहित्यकार की रचना उसके खुद के मत या सोच को प्रकट करती है।

साहित्य-उत्सव में अनेक विद्वान वक्ता हैं, व्याख्यान ही नहीं विमर्श के खुले गलियारे भी हैं। तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता और उसके प्रति अनावश्यक रुझान ने साहित्य और भाषा के अध्ययन को पीछे धकेल दिया था। जयपुर साहित्य उत्सव इसे निरन्तर लोकप्रियता के नवीन आयामों की ओर ले जा रहा है। नागरिकों में साहित्य के प्रति अनुराग जाग रहा है। संस्कार जाग रहे हैं। केवल एक या दो भाषाओं के नहीं पूरे विश्व के प्रतिनिधि यहाँ है। लुप्त और सुप्तप्राय साहित्य पर चर्चा है।

'गाँधी वर्सेज गाँधी' पर अधिकारिक ढंग से बोलने वाले रिचर्ड सोराबजी, अनन्या वाजपेयी और चार्ल्स डिसाल्वो का सत्र अत्यन्त ज्ञानवर्धक रहा। गाँधी अभी भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शोध और रुचि का विषय हैं। हम भारतीय हैं कि मुँह बाये बापू के बारे में नवीन तथ्यों के बारे में सुन रहे हैं।

नवरस पर अशोक चक्रधर का सत्र वस्तुत: नवरस की उचित व्यंजना और निष्पादन कर सका।

अनामिका, गगन गिल का कविता पाठ आनन्ददायक रहा। 'स्त्री होकर प्रश्न करती हो', सब विचारोत्तेजक था। स्त्री विमर्श की बात हो और बात घूम-फिर कर देह, सेक्स की आजादी पर न आये, यह कैसे संभव है। सत्र स्त्री की अस्मिता, उसके विचार स्वातन्त्र्य और आज की चुनौतियों पर था, वहाँ उत्साहीजन विषय से दूर बहुत दूर, पटेबाजी कर रहे थे।

अन्तिम दिन मायाराव के नाम रहा। भीड़ में शोभा डे की स्टार वैल्यू असंदिग्ध है। लेकिन मायाराव (रंगकर्मी) ने न्यूनतम ध्वनि संयोजन के साथ जो एकल प्रस्तुति दी, अविस्मरणीय है। विषय स्त्री स्वातन्त्र्य ही था, परन्तु छोटे से काल खण्ड में सारी समस्याएँ बखूबी सामने आयीं। सरकारी उदासीनता, तटस्थ पुलिस, समाज का पक्षपातपूर्ण रवैया मायाराव की प्रस्तुति के दौरान कई आँखें भींग गईं।

एक तथ्य खला। किताबों की ले दे कर वही दो-तीन दुकानें। शॉल, फैशन, खानपान, हस्तशिल्प की दुकानें निरन्तर बढ़ रही हैं यानि इतर व्यापार का हस्तक्षेप बढ़ रहा है। फिर भी भीड़ इतनी है कि अपने प्रिय वक्ता को सुनने के लिए लोग खड़े रहते हैं। एक दो नहीं ठठ्‌ठ के ठठ्‌ठ। धीरे-धीरे जयपुर साहित्य महोत्सव एशिया की परिभाषा से निकल अन्तर्राष्ट्रीय मंच की ओर बढ़ रहा है।

—दैनिक जागरण से साभार

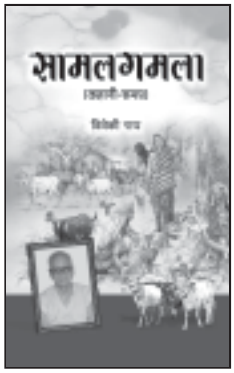

आकार डिमाई

पृष्ठ 668

सजिल्द : 978-81-7124-760-8 • रु० 750.00

सामलगमला [कहानी-समग्र]

विवेकी राय

ग्रामांचलिक जीवन से सम्बन्धित कथा-साहित्य क्षेत्र के समर्पित मौलिक शैलीकार डॉ० विवेकी राय के कुल छः कहानी-संग्रहों का समग्र रूप में प्रकाशन निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति है। लगातार छः दशक तक कहानी साहित्य की समस्त पीढ़ियों और आन्दोलनों को आत्मसात करते हुए उक्त क्षेत्र में कलम चलाकर, ग्राम जीवन के यथार्थ को, उसके सुख-दुःख को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करके आपने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आपकी कहानियाँ अपने वृहत्तर रचनात्मक सरोकारों के साथ सम्पूर्ण भारत के स्वातंत्र्योत्तर गाँवों का साक्षात् कराती हैं।

(पुस्तक से एक कहानी का अंश)

और खिड़की बन्द हो गयी

ट्रेन आखिरी सीटी देकर चलने वाली थी कि वे साहब फाटक खोलकर धड़धड़ाते हुए डिब्बे में दाखिल हुए और ऐसा लगा कि एकबारगी उन्होंने समूचे डिब्बे को सिर पर उठा लिया। वे तीन साहब थे। तीनों एक से एक बढ़कर साहब थे। पहले तो ऐसा लगा कि वे भूलकर इस थर्ड क्लास में घुस आये, मगर बात ऐसी नहीं थी। वे काफी सजग सचेत थे। एक बार उस डिब्बे के समूचे यात्रियों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो गया। रोब छा गया। दिन में भी उजाला हो गया। सब लोग देखने लगे कि कहाँ बैठते हैं, क्योंकि जगह कहीं खाली नहीं दिखाई पड़ती थी। आगे वाले साहब आगे बढ़े। विशेष परिचय के लिए बुशर्ट के कपड़ों के नामपर नामकरण कर लिया जाय। जैसे आगे वाले टेरलिन की बुशर्ट वाले टेरलिन साहब, उनके पीछे डेकरान की बुशर्टवाले डेकरान साहब और सबसे पीछे शार्कस्किन की बुशर्ट वाले शार्कस्किन साहब। जो बात सबमें समान है वह यह कि मानों तीनों सैलून के रास्ते बाथरूम से निकले चले आ रहे हैं। धोबी अभी-अभी कपड़ा बनाकर दे गया है और जूते पर पॉलिस प्लेटफार्म पर ही करायी गयी है। टेरलिन साहब एकदम मुक्त हस्त हैं, परन्तु शार्कस्किन साहब के हाथ में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' की प्रति है और डेकरान साहब की उंगलियों में जलती सिगरेट। ट्रेन चल पड़ी।

''बड़े भाई साहब, यदि आप अपने पैरों को जरा खींच ले तो मैं आगे बढ़ूं। बड़ी कृपा होगी।'' टेरलिन साहब फाटक के पास बैठे एक सज्जन से बोले और उन्होंने चट अपना पैर खींच लिया। अब वे दोनों बर्थ का निरीक्षण करने लगे।

''आपको यदि कोई कष्ट न हो तो अपने बच्चे को आप अपनी गोद में बैठा लें और हम लोगों में से किसी एक के लिए जगह कर दें। आपकी इस कृपा के लिए हम लोग बहुत-बहुत आभारी होंगे।'' टेरलिन साहब ने प्रथम बर्थ पर बैठे एक ग्रामीण से कहा। उसकी बगल में एक बच्चा बैठा था। बच्चा खूब लाल-पीले वस्त्रों से आच्छादित था। संभवतः अपने मामा के गाँव पर से आ रहा था। उस ग्रामीण ने चट बच्चे को उठाकर अपनी गोद में बैठा लिया।

''आप इस स्थान पर आसीन होवें मिस्टर।'' टेरलिन साहब ने डेकरान साहब से कहा।

''अरे नहीं, सो कैसे सम्भव है? आप विराजिये।''

''आइये तो, मैं सबके लिए जगह कर रहा हूँ। हमारे इतने बड़े भाई साहब लोग बैठे हैं, क्या दो आदमी को स्थान नहीं दे सकेंगे?''

''आइये, आइये''।

''तुम बैठो भाई'' डेकरान साहब ने शार्कस्किन साहब से कहा। ये साहब आयु में सबसे बड़े प्रतीत होते हैं। ये अपना एक मिनट समय भी बरबाद नहीं होने देना चाहते और इतने अरसे में ही हाथ में पड़े अखबार के कई कालम पर आँखें दौड़ा दी। उन्होंने अखबार पर से एक बार आँखें हटायीं और फिर बोले—

''अरे यार बैठो भी! क्या एक जगह पर हुज्जत कर रहे हो।''

''मैं कहता हूँ आप आइये। यहाँ जमिये।'' इस बार टेरलिन साहब ने शार्कस्किन साहब को एकदम आर्डर ही कर दिया।

''अच्छा लो, आ गया। धन्यवाद।''

जब शार्कस्किन साहब बैठ गये तो टेरलिन साहब ने एक-एक करके सबसे पूछना शुरू किया। आप पंडित जी, कहाँ जायेंगे? ओ पहलवान साहब, आपको कहाँ तक सफर करना है? बड़े भाई साहब, आप कहाँ तक के संगी हैं? चौधरी साहब, क्या दूरतक चलना है? इत्यादि-इत्यादि। जैसी शक्ल-सूरत वैसे सम्बोधन।

और एक मौलवी साहब तथा उनके एक साथी ने बताया कि उन्हें अगले स्टेशन पर उतरना है।

''अक्खा! देखिये तो, मौलवी साहब आप मेरे कैसे जिगरी दोस्त निकले! खुदा बन्दा करीम की कुदरत कौन जानता है? हमलोग इस भीड़ में चढ़ आये तो ऐसे डिब्बे में जहाँ आप मौजूद हैं....आओ, आओ मिस्टर, मौलवी साहब एकदम हमदर्द दोस्त हैं। दूर से आ रहे हैं। उतरने के पहले पैर सीधा करने के लिए खड़े भी हो सकते हैं....बस, अगला स्टेशन आ ही गया। यह आगे सिगनल है। फास्ट पैसेंजर की चाल के आगे यह दूरी क्या है....बस, मेरे अजीज दोस्त मौलवी साहब, मेहरबानी के साथ थोड़ी तकलीफ गवारा करने की अर्जी है—शुक्रिया-शुक्रिया हाँ ठीक है, हम दोनों आदमी बैठ जायेंगे। आप लोगों का कोई सामान वगैरह हो तो बताइयेगा। हमलोग आदमी पहचानते हैं। दुनिया में शरीफों की बहुत कमी है। इसीलिये दुनिया नरक हो गयी है। हम लोगों को आपकी यह मेहरबानी नहीं भूलेगी....।''

और, आखिरकार मौलवी साहब और उनके दोस्त ने जगह खाली कर दी। टेरलिन साहब ठीक मेरी बगल में बैठे। उन्होंने मेरी ओर मुँह करके मुस्कराते हुए पूछा—

''गुरु जी, यदि मैं सिगरेट पीऊँ तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं हो सकती, आज्ञा दें तो जलाऊँ। यहाँ इस कार्य के लिए तो बस मैं आपके हुक्म का बन्दा हूँ।''

इस वक्तव्य से निस्सन्देह मुझे प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि इतने कुछ मिनटों में टेरलिन साहब का परिचय मुझे मिल गया था। दूसरे उनके 'गुरु जी' सम्बोधन में मुझे बड़ी नीरसता झलक रही थी। एक बार उनकी ओर देखकर मैं चुप रह गया। मेरी चुप्पी पर उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त की—

''मौन स्वीकार का लक्षण है। बस, मेरे दोस्तों, एक सिगरेट मेरी ओर बढ़ाओ। अब मैं शौक करूँगा।''

''....मगर, सिगरेट अब है कहाँ? अगले स्टेशन पर मिल सकती है।'' शार्कस्किन साहब ने उत्तर दिया।

''अच्छा, ठीक है, तब तक मैं समाचारपत्र पढ़ूँ....मगर यार बड़ी गर्मी है। खिड़कियाँ बन्द कर दी जाय। ....क्यों बड़े बाबूजी, यह खिड़की बन्द कर दूँ? गरम हवा आ रही है और इंजन की काली-काली छाई आ रही है।''....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

भोजपुरी के नाम डॉ० कपिला के 75 लाख

वाराणसी। यह भोजपुरी की मिठास का परिणाम है कि गैर भोजपुरी भाषी तथा प्रख्यात कलाविद् पद्मविभूषण डॉ० कपिला वात्स्यायन ने सांसद निधि से भोजपुरी व जनपदीय भाषाओं के विकास हेतु 75 लाख रुपये दिए। यह राशि उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में बहुद्देश्यीय सभागार बनाने के लिए प्रदान की है। केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदानंद शाही यथाशीघ्र सभागार का निर्माण शुरू करने हेतु प्रयासरत हैं।

डॉ० वात्स्यायन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की छात्रा रही हैं और उन्होंने वासुदेव शरण अग्रवाल के निर्देशन में शोध किया था। कुछ दिनों पूर्व भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में भ्रमण के दौरान उन्होंने अपनी सांसद निधि से धन जारी करने का आश्वासन दिया था। कुलपति डॉ० लालजी सिंह ने इस योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद पत्र भी भेजा है और उम्मीद जताई है कि इस पहल से अन्य सक्षम लोग भी प्रेरित होंगे। यह विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। प्रो० शाही के अनुसार भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के लिए सुन्दर बगिया में भूमि आवंटित है। 2010 के नवम्बर में लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने यहाँ शिलान्यास किया था।

विश्वनाथ बने साहित्य अकादमी के अध्यक्ष

प्रसिद्ध कवि, आलोचक व लेखक विश्वनाथप्रसाद तिवारी को साहित्य अकादमी का अध्यक्ष बनाया गया है। वह अकादमी के 12वें अध्यक्ष होंगे। ऐसा पहली बार हुआ है, जब किसी हिन्दी लेखक को यह गौरव प्राप्त हुआ है। अकादमी के पूर्व अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय के निधन के बाद विश्वनाथ तिवारी कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में कार्यभार सम्भाल रहे थे। इनकी नियुक्ति पाँच वर्ष के लिए है। उपाध्यक्ष पद के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कन्नड़ भाषा के लेखक चन्द्रशेखर कंबार को निर्विरोध चुना गया।

दुपट्टे पर कबीर के दोहे

कबीर के बोल बेहद अनमोल माने जाते हैं। ज्ञान के ताने-बाने में बुने साखी-सबद और रमैनी ऐसा मानो रमता जोगी और बहता पानी। उनकी वाणी यूं तो समाज के हर तबके और वर्ग की जुबानी रही है। ऐसे ही मीठे वचनों की पिटारी से कुछ पंक्तियाँ अब परिधानों के आकर्षक होने का सबब बन गयी हैं।

कारीगरी की इस विधा को आर्ट-कैलीग्राफी कहा जाता है और इसे वाराणसी स्थित पीलीकोठी के मकबूल हसन साहब ने दुपट्टे में बखूबी इस्तेमाल कर उनकी खूबसूरती में चार-चाँद लगाया है। उन्होंने सिल्क के कपड़े से बने दुपट्टे पर कबीर के दोहे को उकेरा है। कबीर दास जी के कहे वाक्य—'जब मैं था तब हरी नहीं, अब हरी है मैं नाहीं। सब अंधियारा मिट गया, दीपक देखा माही' को जरी के धागे से सजाया है। शब्द इतने आर्टिस्टिक हैं कि इसे फौरी तौर पर पढ़ा नहीं जा सकता बल्कि इसे समझने के लिए थोड़ी जद्दोजहद करनी पड़ेगी।

श्री हसन ने बताया कि पिछले साल दिल्ली में आर्ट-कैलीग्राफी की प्रदर्शनी लगायी गयी थी। इसमें छपी राष्ट्रीय स्तर की मैगजीन 'क्राफ्टिंग इंडिया स्क्रिप्ट्स' के कवर और बैक पेज पर उनके द्वारा बनाये गये कबीर दास के दोहे और उर्दू के लफ्जों वाले दुपट्टे को जगह मिली है। इसे वो खुद के लिए ही नहीं बल्कि काशी के गौरव की बात मानते हैं।

पर्दे पर रुश्दी की 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन'

विवादित भारतीय लेखक सलमान रुश्दी के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास मिडनाइट्स चिल्ड्रेन पर इसी शीर्षक से बनी दीपा मेहता की फिल्म प्रदर्शित होगी। इस फिल्म में रुश्दी ने अपनी आवाज भी दी है। इसके अलावा उन्होंने इसकी पटकथा भी लिखी है।

लंदन के स्कूल में मिलीं न्यूटन की तीन सौ साल पुरानी किताबें

शायद ही किसी ने सोचा होगा कि सालों से स्कूल के फिजिक्स लैब में धूल फांक रही साधारण सी दिखने वाली ये किताबें इतनी अनमोल भी हो सकती हैं। लंदन के एक स्कूल में दुनिया के महानतम वैज्ञानिकों में से एक सर आइजैक न्यूटन की तीन सौ साल पुरानी किताबें मिली हैं। इनमें गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त पर उनके विचारों का संग्रह है। ये किताबें स्टैडफोर्डशायर के न्यूकैसल अंडर लाइम स्कूल से मिलीं।

पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा फिराक गोरखपुरी का गाँव

फिराक गोरखपुरी के नाम से मशहूर उर्दू शायर रघुपति सहाय का पैतृक गाँव वनवारपार विश्व के पर्यटन मानचित्र पर होगा। यह गाँव उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में है। अपने गाँव और शहर में उपेक्षित फिराक गोरखुपरी की स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिए पर्यटन विभाग ने एक प्रस्ताव तैयार किया है। सरकार की मंजूरी मिलने के बाद इस पर शीघ्र कार्रवाई प्रारम्भ होगी।

गूगल पर छाए गणितज्ञ रामानुजन

लोकप्रिय सर्चइंजन गूगल का पेज विगत दिनों भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास अयंगर रामानुजन को समर्पित रहा। रामानुजन की 125वीं जयन्ती पर गूगल ने ओपन पेज पर पाई समेत उनकी कई प्रमेय को कैरीकेचर के माध्यम से दर्शाया था। 22 दिसम्बर, 1887 को तमिलनाडु में जन्मे रामानुजन के पास किसी भी तरह की औपचारिक शिक्षा नहीं थी। फिर भी उन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धान्त के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने गणित के 3,884 प्रमेयों का संकलन किया। इनमें से अधिकांश को सही सिद्ध किया जा चुका है। कई बार वह लॉजिकल स्टेप्स (उत्पत्ति) का औपचारिक जिक्र कए बिना सीधे निष्कर्ष लिख देते थे। रामानुजन रॉयल सोसाइटी के सबसे कम उम्र के सदस्य भी रहे। उनके जीवन को सही दिशा देने में प्रोफेसर हार्डी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा।

हिन्दी बोलते हैं आस्ट्रेलिया के राजदूत

मेलबर्न। हिन्दी बोलने वाले पैट्रिक सकलिंग को भारत में आस्ट्रेलिया का अगला उच्चायुक्त नियुक्त किया गया है। सकलिंग ने यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी से हिन्दी में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा हासिल किया है। वह पीटर वर्गीज का स्थान लेंगे।

दक्षिण और हिन्दी

एक प्राप्त समाचार के अनुसार 'दक्षिण और हिन्दी' विषय पर तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर द्वारा प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण बृहत् योजना बनाई गयी है, जिसमें दक्षिण भारत का हिन्दी को योगदान, दक्षिण के हिन्दी रचनाकार, हिन्दी जन संचार माध्यम इत्यादि के योगदान को लेकर अब तक प्रकाशित/अप्रकाशित आलोचनात्मक/विवरणात्मक सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय हुआ है। इस प्रकाशन योजना के दस खण्ड होंगे।

योजना सम्बन्धी विवरण वेबसाइट : www.cutn.ac.in से प्राप्त किए जा सकते हैं। इस विषय के किसी भी पहलू/पहलुओं पर आलेख भेजने का अनुरोध भी किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

आनंद पाटील, हिन्दी अधिकारी, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलक्टरी उपभवन, तंजावुर रोड, तिरुवारूर-610004 (तमिलनाडु)। फोन : 91-94860 37432, 91-94890 54257

रविशंकर, भीमसेन पर डाक टिकट

तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु)। भारतीय डाक विभाग बहुत जल्द प्रतिष्ठित संगीतकारों के सम्मान में डाक टिकट जारी करने की योजना बना रहा है। इन संगीतकारों में स्वर्गीय पण्डित रविशंकर, भीमसेन जोशी और डी०के० पटम्मल का नाम शामिल है। इसके अलावा भारतीय

सिनेमा के कुछ मशहूर अभिनेताओं के सम्मान में भी डाक टिकट जारी किए जाएँगे। विभाग की ओर से जारी बयान के अनुसार मल्लिकार्जुन मंसूर, कुमार गंधर्व, गंगूबाई हंगल और उस्ताद इलियाद खान को 'द म्यूजिशियन्स' श्रृंखला में शामिल किया जाएगा। ये डाक टिकट दो जुलाई को रिलीज किए जाएँगे।

सहजानंद सरस्वती संग्रहालय को मिली धरोहर

स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय ने एक और उपलब्धि हासिल की है। बीते दिनों हिन्दी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार अन्नपूर्णानन्द के परिवार के अनिरुद्ध कुमार हेकरवाल ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय को संग्रहालय के लिए महात्मा गाँधी के पत्र सौंपे हैं। दरअसल ये पत्र महात्मा गाँधी ने जून 1941 को सेवाग्राम से अन्नपूर्णानन्द जी को लिखे हैं। पत्रों में उन्होंने अन्नपूर्णानन्दजी के हाल-चाल के साथ उनकी भेजी पुस्तकें पढ़ने का भी वादा किया है। पत्रों के रूप में स्वामी सहजानन्द सरस्वती संग्रहालय को मिली इस दुर्लभ धरोहर को खासा महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। गाँधी के अलावा हेकरवाल ने अन्नपूर्णानन्द जी को जय प्रकश नारायण द्वारा लिखे पत्र भी कुलपति को सौंपे हैं।

अब पूछेगा आयकर विभाग किस कमाई से महंगी पढ़ाई

मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेजों तथा आवासीय स्कूलों में जिनके बच्चे पढ़ रहे हैं, वे अब आयकर विभाग की नजर पर चढ़ गये हैं। आयकर विभाग अब रिटर्न न भरने वाले या रिटर्न में असलियत न दर्शाने वाले लोगों से इस बात की दरियाफ्त करने की तैयारी में है कि वे किस कमाई से अपने बच्चों की इतनी महंगी पढ़ाई का खर्चा उठा रहे हैं। ऐसे लोगों की सूची बनाई जा रही है जो आयकर दाता नहीं हैं, लेकिन अपने बच्चों की शिक्षा पर कर योग्य धन खर्च कर रहे हैं।

कॉमिक के रूप में प्रकाशित होगी मुहम्मद साहब की जीवनी

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की जीवनी एक कॉमिक के रूप में प्रकाशित होने जा रही है। न्यूज 24 के अनुसार फ्रांसीसी साप्ताहिक अखबार 'चार्ली हेब्डो' उनकी जीवनी प्रकाशित करने जा रहा है। यह वही साप्ताहिक अखबार है जो मुहम्मद साहब से जुड़ी सामग्री प्रकाशित करने को लेकर पहले भी विवादों में रह चुका है। अखबार के इस कदम से भी नया विवाद खड़ा हो सकता है। अखबार के प्रकाशक का कहना है कि कॉमिक के रूप में पैगंबर मुहम्मद साहब की जीवनी का सम्पादन मुस्लिम विद्वानों के एक समूह ने किया है।

पत्राचार से इंजीनियरिंग की अनुमति जल्द

नई दिल्ली। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) जल्द ही पत्राचार के जरिए और तकनीकी कोर्सों की पढ़ाई की अनुमति देगा। इसमें इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी शामिल है। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री एम एम पल्लम राजू ने यह जानकारी दी।

शब्दों को सहजेंगे शीशे के कवच

गोस्वामी तुलसीदास ने जहाँ रामचरित मानस की चौपाइयाँ लिखीं, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की लीलाओं को लिपिबद्ध किया, अब उसी तुलसीघाट पर उनकी पाण्डुलिपियों का म्यूजियम बनेगा। म्यूजियम इटालियन फ्रेम से सजेगा तो नियॉन लाइट में फबेगा भी। इसकी परिकल्पना एक वर्ष पहले घाट के मन्दिर से पाण्डुलिपि चोरी होने के बाद की गई थी लेकिन म्यूजियम अब आकार लेने लगा है।

इस म्यूजियम का निर्माण मन्दिर के परिक्रमा क्षेत्र में किया जा रहा है। म्यूजियम में अवधी, उर्दू, फारसी, कैथी के साथ ही रशियन व अंग्रेजी यानी कुल छह भाषाओं की पाण्डुलिपियाँ रखी जाएँगी।

इन पाण्डुलिपियों को देश के विभिन्न हिस्सों से एकत्र किया जा रहा है।

अब डॉक्टर जाँचेंगे स्कूली बच्चों के नोट बुक

स्कूली बच्चों के नोट बुक अब उनके टीचरों के साथ डॉक्टर भी जाँचेंगे। यह उन बच्चों को अव्वल बनाने में मददगार साबित होगा जो सामान्य होने के बावजूद अपनी किसी न किसी कमी के कारण पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं।

भारतीय बाल अकादमी ने पढ़ाई में पिछड़ने वाले बच्चों की कमियाँ तलाशने और उन्हें दूर कर मेधावियों की श्रेणी में शामिल करने की योजना बनायी है। इसके लिए अकादमी ने त्रिवेन्द्रम में चलाये जा रहे पायलट प्रोजेक्ट को आदर्श के रूप में लिया है। उसी आधार पर अकादमी उत्तर प्रदेश के स्कूलों में भी यह योजना लागू करने वाली है।

गाँधीजी की चिट्ठी 43 लाख में नीलाम

साबरमती जेल से 1922 में रवीन्द्रनाथ टैगोर के बड़े भाई द्विजेन्द्र टैगोर को लिखी गई महात्मा गाँधी की चिट्ठी अनुमान से सात गुना अधिक 49,250 पौंड (करीब 43 लाख रुपये) में नीलाम हुई है।

चिट्ठी में गाँधीजी ने द्विजेन्द्रनाथ को लिखा था कि उनकी गिरफ्तारी ऐसे समय हुई जब वह महसूस कर रहे थे कि वह पूरी तरह तैयार हैं। यंग इण्डिया जर्नल के समर्थन में पेंसिल से लिखे दो पत्रों को भी उनसे पहुँचाने के लिए कहा गया था।

बंगाल में हिन्दी को दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा

पश्चिम बंगाल में हिन्दी को दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा प्राप्त हो गया है। राज्य सरकार ने वेस्ट बंगाल आफिसिअल लैंग्वेज (सेकेण्ड) एमेंडमेंट बिल, 2012 पारित कर राज्य के 10 प्रतिशत से अधिक हिन्दी भाषी आबादी वाले क्षेत्रों में हिन्दी को दूसरी सरकारी भाषा के रूप में मान्यता दे दी है। राज्य में उर्दू, संथाली, उडिया और पंजाबी को भी दूसरी सरकारी भाषा के रूप में मान्यता मिल गई है।

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	पराग कुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(दिनांक 1 मार्च, 2013) **(अनुरागकुमार मोदी)**

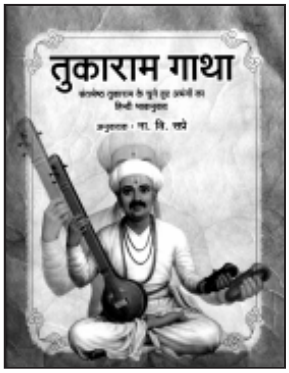

आकार
क्राउन
अठपेजी

पृष्ठ
252

सजिल्द : 978-81-7124-778-3 • रु० 400.00

तुकाराम गाथा

[संतश्रेष्ठ तुकाराम के चुने हुए अभंगों का हिन्दी भावानुवाद]

अनुवादक : ना०वि० सप्रे

'अभंग' मराठी का एक 'छंद' प्रकार जो मराठी पद्यकाव्य में प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राय: सभी संत कवियों ने इस विधा में काव्य रचना की और इसी बहाने परमेश्वर की आराधना की। मराठी के समीक्षक ना०ग० जोशी के अनुसार—''ओवी और वारकरियों के अभंग में सम्बन्ध अभेद का है। ओवी का ही मालात्मक रूप अभंग के रूप में पहचाना जाने लगा।''

अपने पूर्ववर्ती संतश्रेष्ठ नामदेव तथा एकनाथ की तरह तुकाराम ने भी विशाल अभंग की रचना की।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

(२५५) आपुला विचार करीन जीवाशीं। काय या जनाशीं चाड मज॥ १॥ आपुलें स्वहित जाणती सकळ। निरोधितां बळें दु:ख वाटे॥ २॥ आइको नाइको कथा कोणीतरी। जाउनिया घरीं निजो सुखें॥ ३॥ माझी कोण वोज झाला हा शेवट। देखोनिया वाट आणिकां लागे॥ ४॥ तुका म्हणे भाकूं आपुली करुणा। जयाची वासना तया फळे॥ ५॥

अब मैं अपने मन में अपने ही हित का विचार करूँगा। मुझे इन लोगों से क्या लेना देना? हर कोई अपना हित जानता ही है। मैं उन्हें उपदेश देने के चक्कर में क्यों पड़ूँ? उन्हें घर-गिरस्ती करनी है तो करने दो। मैं उन पर जोर-जबर्दस्ती करता हूँ तो उन्हें बुरा लगता है। मेरी कथा कोई सुने या न सुने, हरिकथा के बीच में उठकर घर जाकर सो जाए मुझे क्या करना है? दूसरी बात यह है कि मेरे परमार्थ की भी सफल परिमिति कहाँ हुई है जिसे आदर्श मान कर लोग परमार्थ पर चलें?

तुकाराम महाराज कहते हैं, अब मैं अपने ही हित के लिए ईश्वर से करुणा की भीख माँगूगा। मुझे अन्य लोगों से कोई कर्त्तव्य नहीं है। जिनकी जैसी वासना होगी वैसा उन्हें फल मिलेगा।

(२५६) ध्याईं अंतरिच्या सुखें। काय बडबड वाचा मुखें॥ १॥ विधि निषेध ऊर फोडी। जंव नाहीं अनुभव गोडी॥ २॥ वाढे तळमळ उभयतां। नाहीं देखिलें अनुभवितां॥ ३॥ आपुल्याला मतें पिसें। परि तें आहे जैसें तैसें॥ ४॥ साधनाची सिद्धि। मौन करा स्थिर बुद्धि॥ ५॥ तुका म्हणे वादें। वायां गेली ब्रह्मवृंदें॥ ६॥

अंत:करण के सुख से सन्तुष्ट रहो। मुख से व्यर्थ की बक-बक करने से क्या लाभ है? जब तक आत्मसुख की माधुरी का स्वाद नहीं मिलता तभी तक शास्त्रों के विधि-निषेध छाती पीटते हैं, 'यह करो, यह मत करो'। ये आज्ञाएँ मन पर आघात करती रहती हैं। जब तक आत्मा के सुरक्षित होने का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता तभी तक ऐहिक और पारमार्थिक विषयों की प्राप्ति के लिए व्याकुलता बढ़ती रहती है। कितने ही दार्शनिक विद्वान भ्रमवश आत्मा के स्वरूप को भिन्न-भिन्न मानते हैं लेकिन आत्मा मूलत: अकर्वी-अभोक्ता, अद्वय, आनंद स्वरूप ही है। मत भिन्नता के कारण आत्मस्वरूप में परिवर्तन नहीं होता। परमार्थ के साध्य प्राप्त करने में साधन समर्थ हो सकें इसलिए मौन धारण करना पड़ता है। व्यर्थ की बकबक से कोई लाभ नहीं होता। उसी प्रकार बुद्धि भी सुनिश्चित होनी चाहिए।

तुकाराम महाराज कहते हैं, आत्मज्ञान प्राप्त किये बिना केवल शुष्क वाद करने के कारण अनेक विद्वान ब्राह्मण बेकार सिद्ध हुए हैं।

(२५७) संतांचीं उच्छिष्टें बोलतों उत्तरें। काय म्यां गव्हारें जाणावें हें॥ १॥ विठ्ठलाचें नाम घेतां नये शुद्ध। तेथें मज बोध काय कळे॥ २॥ करितों कवित्व बोबड्या उत्तरीं। झणी मजवरी कोप धरा॥ ३॥ काय माझी याती नेणा हा विचार। काय मी तें फार बोलों नेणें॥ ४॥ तुका म्हणे मज बोलवितो देव। अर्थ गुह्य भाव तोचि जाणे॥ ५॥

मैं जो कुछ भी बोलता हूँ वह सब व्यासादिक संतों की जूठन है। अन्यथा मेरे जैसे मूर्ख की समझ में क्या आता है? मैं तो विठ्ठल के नाम का उच्चारण भी ठीक से नहीं कर पाता तो शास्त्रार्थ के बारे में क्या जानूँगा? किसी तरह तुतलाए शब्दों में अभंग कह रहा हूँ। यदि किसी अभंग में प्रसंगवश मैंने साफ-साफ कुछ कहा हो तो नाराज न होइए। मेरी जाति भी तो श्रेष्ठ नहीं है। आप यह सब नहीं जानते ऐसी बात नहीं है। कहाँ कितना और किस तरह बोला जाए इस बात का विवेक मुझमें नहीं है।

तुकाराम महाराज कहते हैं, भगवान ही मुझ से बुलवाते हैं, उसका गूढ़ और अभिप्राय भी वही जानते हैं।

(२५८) तुज ऐसा कोण उदाराची रासी। आपुलेंचि देसी पद दासा॥ १॥ शुद्ध हीन कांहीं न पाहासी कुळ। करिसी निर्मळ वास देहीं॥ २॥ भावें हें कदान्न खासी त्याचे घरीं। अभक्ताच्या परी नावडती॥ ३॥ नवजासी जेथें दुरी दवडितां। न येसी जो चित्ता योगियांच्या॥ ४॥ तुका म्हणे ऐसीं ब्रीदें तुझीं खरीं। बोलतील चारी वेद मुखें॥ ५॥

भगवन्, जग में तुम जैसी औदार्य की राशि और कौन है? तुम अपने भक्तों को सायुज्य मुक्ति देते हो। यह पद देते समय तुम भक्त की पात्रता, उसके कुल आदि का विचार नहीं करते। तुम उसके देह में वास करते हो। विदुर के घर तुम बड़े प्रेम से चावल का पकाया हुआ दलिया खाते हो, लेकिन दुर्योधन जैसे अभक्त के घर के पकवान तुम्हें अच्छे नहीं लगते। वैष्णवों के घर से भगाये जाने पर भी तुम नहीं जाते और योगियों के अन्त:करण में नहीं बसते।

तुकाराम महाराज कहते हैं, भगवन्, 'उदार', 'भक्तवत्सल' आदि तुम्हारे विशेषण हैं, ऐसा चारो वेद स्वमुख से कहते हैं।

(२५९) कोणाच्या आधारें करूं मी विचार। कोण देईल धीर माझ्या जीवा॥ १॥ शास्त्रज्ञ पंडित नव्हे मी वाचक। यातिशुद्ध एक ठाव नाहीं॥ २॥ कलियुगीं बहु कुशल हे जन। छळितील गुण तुझे गातां॥ ३॥ मज हा संदेह झाला दोहीं सवा। भजन करूं देवा किंवा नको॥ ४॥ तुका म्हणे आतां दुरावितां जन। किंवा हें मरण भलें दोन्ही॥ ५॥

भगवन, तुम्हारी भक्ति करूँ या न करूँ इसका निर्णय किन प्रमाणों के आधार पर किया जाए? परमार्थ के इस मार्ग में मेरे मन को कौन संबल देगा? अपनी बुद्धि से विचार करने के लिए मैं कोई शास्त्री, पंडित अथवा ग्रंथ का वाचक नहीं हूँ। मेरी जाति भी शुद्ध नहीं है। किसी समाज विशेष में मेरी प्रतिष्ठा नहीं है। इस कलियुग में बोलने में अत्यंत कुशल नास्तिक तुम्हारा गुणगान करते समय मेरा उपहास करते हैं और कहते हैं, जो जग में कहीं नहीं है उस ईश्वर का नाम लेने में अपने समय और परिश्रम का अपव्यय क्यों करते हो। भगवन, उनकी बातों से मेरे मन में भजन करूँ या न करूँ का सन्देह उत्पन्न हो गया है।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का स्मरण

आर्य जगत् एवं संस्कृत जगत् के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान् स्व० पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के जन्मदिवस पर 4 संस्कृत विद्वानों को विश्वभारती सम्मान प्रदान किया गया। स्व० डॉ० कपिलदेव द्विवेदी स्मृति सम्मान—प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी (वाराणसी), डॉ० श्रीकृष्ण सेमवाल (नई दिल्ली) तथा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय को प्रदान किया गया। स्व० श्रीमती ओम् शान्ति स्मृति विश्वभारती सम्मान डॉ० सूर्यादेवी चतुर्वेदी (राजस्थान) को प्रदान किया गया। विद्वानों का परिचय विश्वभारती अनुसन्धान परिषद के अध्यक्ष डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी ने प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी ने कहा—अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् डॉ० कपिलदेव द्विवेदी वेद, वेदान्त, व्याकरण, भाषाविज्ञान तथा साहित्य के अप्रतिम विद्वान् थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ० अशोक कुमार मिश्र ने कहा गुरुदेव डॉ० द्विवेदी ज्ञानपुर नगर की विभूति थे। उनसे भारत और संस्कृत की महिमा बढ़ी।

हिन्दी संस्थान के 108 पुरस्कार बहाल

उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कारों के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की जगी उम्मीदों को पूरा कर दिया। संस्थान के 36वें स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने 2008 से बन्द 108 पुरस्कार फिर से बहाल करने की घोषणा की। उन्होंने अब यहाँ से दिए जाने वाले कुल 111 पुरस्कारों की राशि भी दोगुनी की और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के नाम पर चार लाख की राशि का नया पुरस्कार देने को भी स्वीकृति दे दी।

हिन्दी संस्थान का 36वाँ स्थापना दिवस 'डॉ० शिव मंगल सिंह सुमन व सुब्रह्मण्य भारती स्मृति सभा व काव्य गोष्ठी' के रूप में मनाया गया। मुख्यमंत्री अखिलेश यादव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा दिए जाने वाले 111 पुरस्कार संशोधित राशि के साथ : भारत भारती सम्मान [संख्या 1 (5,02,000)], लोहिया साहित्य सम्मान [संख्या 1 (4,00,000)], हिन्दी गौरव सम्मान [संख्या 1 (4,00,000)], महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान [संख्या 1 (4,00,000)], पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान [संख्या 1 (4,00,000)], अवंती बाई सम्मान [संख्या 1 (4,00,000)], साहित्य भूषण सम्मान [संख्या 10 (2,00,000)], लोक भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], कला भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], विद्या भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], विज्ञान भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], पत्रकारिता भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], बाल साहित्य भारती सम्मान [संख्या 1 (2,00,000)], सौहार्द सम्मान [संख्या 15 (2,02,000)], हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान [संख्या 2 (50,000)], विश्वविद्यालयस्तरीय सम्मान [संख्या 2 (50,000)], मधुलिमये स्मृति पुरस्कार [संख्या 1 (2,00,000)], पुस्तकों पर देय नामित पुरस्कार [संख्या 34 (40,000)], पुस्तकों पर देय सर्जना पुरस्कार [संख्या 34 (16,000)]

इला भट्ट को इन्दिरा गाँधी पुरस्कार

प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता इला रमेश भट्ट को वर्ष 2011 के इन्दिरा गाँधी शान्ति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के हाथों उन्हें यह पुरस्कार देश में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए दिया गया।

राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह के अलावा संप्रग अध्यक्ष सोनिया गाँधी उपस्थित थीं। सेल्फ इम्प्लायड वीमेंस एसोसिएशन (सेवा) की संस्थापक इला को पुरस्कार के रूप में 25 लाख रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया गया।

डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम' सम्मानित

पंजाब कला साहित्य अकादमी के तत्त्वावधान में जालंधर (पंजाब) के गुरु नानकदेव जिला पुस्तकालय में सोलहवें अखिल भारतीय वार्षिक अकादमी अवार्ड वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें चर्चित कथाकार, कवि, हिन्दी सेवी एवं अनेक समाचार पत्रों से सम्बद्ध रहे वरिष्ठ पत्रकार डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम' को झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत पत्रकारिता, साहित्य एवं हिन्दी प्रसार हेतु विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करने पर राष्ट्रीय विशेष अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया।

14वाँ आचार्य निरंजननाथ सम्मान समारोह

आज साहित्य और राजनीति के सम्बन्धों को पुनर्परिभाषित करने की जरूरत आ गई है। जहाँ साहित्य संस्कृति का सबसे बड़ा प्रतिनिधि है वहीं राजनीति संस्कृति का नुकसान किये बगैर आगे नहीं बढ़ती। पतनशीलता के ऐसे दौर में अभिधा से काम चल ही नहीं सकता। इसीलिए जब शब्द कम पड़ने लगते हैं तब शब्दों को मारना पड़ता है ताकि नए शब्द जन्म ले सकें। उक्त विचार अणुव्रत विश्व भारती राजसमन्द में पुरस्कृत साहित्यकार असगर वजाहत ने आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान तथा साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मान समारोह में व्यक्त किये।

सम्मान समिति के संयोजक कमर मेवाड़ी ने आचार्य निरंजननाथ सम्मान प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सम्मान का उद्देश्य आचार्य साहब के साहित्यिक अवदान को स्मरण करते हुए हिन्दी साहित्य की रचनात्मक ऊर्जा को रेखांकित करना है।

समारोह में असगर वजाहत को उनके कहानी संग्रह 'मैं हिन्दू हूँ', युवा आलोचक पल्लव को उनकी पुस्तक 'कहानी का लोकतंत्र' तथा आलोचक डॉ० सूरज पालीवाल को उनके समग्र साहित्यिक अवदान के लिए शाल एवं श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न तथा सम्मान राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री वेदव्यास ने की।

5वाँ अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति सम्मान समारोह-2012 सम्पन्न

अपने समृद्ध साहित्यिक इतिहास की विरासत को आगे बढ़ाते हुए अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति-समिति के तत्वावधान में मुजफ्फरपुर शहर में 5वें अयोध्या प्रसाद खत्री सम्मान-समारोह का आयोजन करते हुए डॉ० वीरेन नंदा द्वारा सम्पादित स्मारिका 'विरासत' को लोकार्पित किया गया। समारोह में डॉ० रोज केरकेट्टा को सम्मानित करते हुए वयोवृद्ध साहित्यकार श्री आनन्द भैरव शाही ने प्रशस्ति-पत्र, शॉल तथा (ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये) नगद राशि के साथ अयोध्या प्रसाद खत्री की मूर्ति का स्मृति-चिह्न प्रदान किया।

इस अवसर पर आयोजित विचार सत्रों में डॉ० रोज केरकेट्टा, डॉ० रणेन्द्र, श्री प्रियदर्शन एवं अन्य विद्वानों ने विचार प्रस्तुत किये। अध्यक्षता डॉ० वीर भारत तलवार ने की।

भारतीय अफसर अमेरिकी पुरस्कार के लिए नामित

नेपाल में तैनात भारतीय विदेश सेवा के एक अधिकारी को प्रतिष्ठित अमेरिकी 'पुशकार्ट प्राइज 2013' पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। साहित्य अकादमी ने अभय कुमार को उनकी तीन कविताओं 'वाट्स ए बीच', 'मेसर' और 'एब्रीथिंग हैज सिक्रेट' के लिए नामित किया। अभय अब तक आठ किताबें और चार कविताएँ लिख चुके हैं। पुशकार्ट प्राइज अमेरिका के सबसे बड़े साहित्य पुरस्कारों में एक है।

सृजन सम्मान

विगत दिनों लखनऊ में नेपाल, अमेरिका, कनाडा व भारत के हिन्दी भाषा के कवियों को डेस्टीनेशन ट्रेंड्स वेलफेयर सोसाइटी की तरफ से सम्मानित किया गया। अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी कविता समारोह पद्मभूषण डॉ० गोपालदास नीरज को समर्पित था। 'सृजन सम्मान' डॉ० नरेन्द्र नाथ मिश्र (वाराणसी), 'विशिष्ट नामित सम्मान' डॉ० सुमन दुबे (गाजीपुर) को प्रदान किया गया।

खुशवंत सिंह के घर जाकर अखिलेश ने किया सम्मानित

प्रख्यात लेखक व पत्रकार खुशवंत सिंह के सामाजिक योगदान से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव काफी प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि अपनी लेखनी से सर्वधर्म समभाव को बढ़ावा देने के साथ ही खुशवंत सिंह ने समाज को नई राह दिखाई है। युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित किया है। मुख्यमंत्री ने दिल्ली में खुशवंत सिंह के आवास पर जाकर उन्हें सम्मानित किया। खुशवंत सिंह को आल इण्डिया माइनॉरटीज़ फोरम फॉर डेमोक्रेसी की ओर से दिए गए इस सम्मान के लिए मुख्यमंत्री ने फोरम के प्रमुख अम्मार रिजवी की भी सराहना की। मुख्यमंत्री ने खुशवंत सिंह को शाल, प्रशस्ति पत्र और बुके देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्था के प्रमुख अम्मार रिजवी भी उपस्थित थे।

राकेश भारती मित्तल सम्मानित

भारती फाउण्डेशन के को-चेयरमैन राकेश भारती मित्तल को न्यूकैसल यूनिवर्सिटी ने विगत दिनों डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया।

हेमा मालिनी को भरत मुनि सम्मान

प्रसिद्ध अभिनेत्री और भरतनाट्यम नृत्यांगना हेमा मालिनी को कला और संस्कृति के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए प्रतिष्ठित भरत मुनि सम्मान से सम्मानित किया गया।

नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत मुनि के नाम पर यह सम्मान कलिंगायन तोर्यायात्रिकम नाम की संस्था ने शुरू किया है। तीन दिवसीय भरत मुनि महोत्सव के अन्तिम दिन 18 दिसम्बर को हेमा मालिनी को भारतीय कला और मनोरंजन जगत में अमूल्य योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

गोविंदन नायर को पुश्किन पुरस्कार

रूसी संस्कृति, भाषा और साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए केरल यूनिवर्सिटी में रूसी विभाग के पूर्व प्रमुख के० गोविंदन नायर को पुश्किन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राजधानी स्थित रूसी संस्कृति केन्द्र के अनुसार यह पुरस्कार भारतीय नागरिक को रूसी भाषा के विकास में उसके योगदान के लिए दिया जाता है।

कृष्ण तूर को गालिब सम्मान

नई दिल्ली के गालिब संस्थान द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में जस्टिस बद्र दुर्रेज अहमद ने छह उर्दू साहित्यकारों को गालिब सम्मान 2012 से सम्मानित किया। शायरी के सरताज गालिब के नाम पर प्रत्येक वर्ष उर्दू के साहित्यकारों को विशेष योगदान के लिए यह सम्मान दिया जाता है। कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के मशहूर शायर कृष्ण कुमार तूर को उनकी उर्दू कविताओं के लिए इस पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

राजन-साजन मिश्र को तानसेन अलंकरण

ग्वालियर। विगत दिनों चार दिवसीय 'तानसेन समारोह' संगीत सम्राट तानसेन की समाधि स्थल पर सम्पन्न हुआ। संगीत सभा के आरम्भ से पहले मध्य प्रदेश सरकार की ओर से बनारस घराने के प्रतिष्ठित हिन्दुस्तानी शैली के शास्त्रीय गायक पण्डित राजन-साजन मिश्र को तानसेन अलंकरण प्रदान किया गया। महापौर समीक्षा ने मिश्र बन्धुओं को शॉल, श्रीफल, दो लाख रुपये की सम्मान राशि व आवरण पट्टिका प्रदान की।

वातायन शिखर सम्मान

हिन्दी साहित्य संस्था 'वातायन' ने लंदन के हाउस ऑफ लार्ड्स में निदा फाजली को इस साल के वातायन शिखर सम्मान और गुजराती के कवि और गद्यकार शोभित देसाई को वातायन सम्मान से सम्मानित किया। 'वातायन : पोएट्री ऑन साउथ बैंक' सम्मान समारोह का आयोजन बैरोनेस श्रीला फ्लैदर के संरक्षण में हुआ।

इस समारोह में निदा फाजली और देसाई को बैरोनेस फ्लैदर ने शॉल ओढ़ाकर और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक सत्येन्द्र श्रीवास्तव ने सम्मान-पत्र और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

गोपीचंद नारंग को मूर्तिदेवी पुरस्कार

विगत दिनों राजधानी में उपराष्ट्रति हामिद अंसारी ने उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक प्रो० गोपीचंद नारंग को उनकी कृति 'उर्दू गजल और हिन्दुस्तानी जेहन व तहजीब' के लिए वर्ष 2010 का मूर्तिदेवी पुरस्कार समर्पित करते हुए कहा कि उर्दू हमारे मुल्क की जुबानों में से एक है और प्रोफेसर नारंग ने उसे देशवासियों के लिए दुबारा जिंदा कर दिया है। यह बड़ी बात है।

नारंगी मूर्तिदेवी पुरस्कार पाने वाले उर्दू के पहले लेखक हैं। पुरस्कारस्वरूप उन्हें चार लाख रुपए भेंट किये गये। निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष टी०एन० चतुर्वेदी ने कहा कि नारंग ने अपने काम के जरिए हमारी गंगा-जमुनी तहजीब को उजागर करने की कोशिश की है। यह पुरस्कार किसी चिन्तनपरक कृति को दिया जाता है और यह सम्मान प्रो० नांरग का ही नहीं, उर्दू अदब के सभी लोगों का सम्मान है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार-2012

विगत 20 दिसम्बर को साहित्य अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विश्वनाथ तिवारी और कार्यकारी सचिव श्री के०एस० राव ने साहित्य अकादेमी पुरस्कार-2012 की घोषणा की, जिसमें हिन्दी में श्री चंद्रकांत दवताले को (कविता संग्रह 'पत्थर फेंक रहा हूँ') अकादेमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। इसके अलावा **11 कवियों** सर्वश्री जीत थाइल (अंग्रेजी), दर्शन बुट्टर (पंजाबी), आईदान भाटी (राजस्थानी), कृष्ण कुमार तूर (उर्दू), रामजी ठक्कर (संस्कृत), गुणेश्वर मोसाहारी (बोडो), बालकृष्ण भौरा (डोगरी), एच०एस० शिवप्रकाश (कन्नड़), माखनलाल कंवल (कश्मीरी), काशीनाथ शांबा लोलयेंकार (कोंकणी) और के० सच्चिदानंदन (मलयालम) के काव्य-संग्रह का चयन किया गया। **चार उपन्यासकार** सर्वश्री चंदना गोस्वामी (असमिया), सुब्रत मुखोपाध्याय (बांग्ला), जोध छी सनसन (मणिपुरी) और डी० सेल्वराज (तमिल) को अकादेमी पुरस्कार के लिए चुना गया। श्री चन्द्रकांत टोपीवाला (गुजराती) की समालोचनात्मक कृति और श्रीमती शैफलिका वर्मा (मैथिली) को आत्मकथा के लिए चुना गया। सर्वश्री जयन्त पवार (मराठी), उदय थुलुड (नेपाली), गौरहरि दास (ओडिया), गंगाधर हांसदा (संथाली), इंद्रा वासवानी (सिंधी) और पी० सुब्बारामय्या (तेलुगु) को उनके कहानी संग्रह के लिए चुना गया। पुरस्कार के अन्तर्गत उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल और एक लाख रुपए की राशि शामिल है।

20 भाषाओं के लिए युवा पुरस्कार और 24 पुस्तकों के अनुवाद पुरस्कार भी घोषित किये गए। सर्वश्री कुणाल सिंह (हिन्दी), अमन सेठी (अंग्रेजी), परगट सिंह (पंजाबी), दिगंत लावारी (बोडो), मलारवती (तमिल), को **उपन्यास**; कमल कुमार तांती (असमिया), यश रैणा (डोगरी), जतुष जोशी (गुजराती), आरिफ राजा (कन्नड़), अरुणाभ सौरभ (मैथिली), लोपा आर (मलयालम), ओम नागर (राजस्थानी), प्रवीण पंड्या (संस्कृत) को **कविता संग्रह**; सादिक हुसैन (बांग्ला) एवं सृष्टिश्री नायक को **कहानी संग्रह**, फारूख शाहीन (कश्मीरी) एवं नमन धावस्कर सावंत (कोंकणी) को **साहित्यिक आलोचना**, धर्मकीर्ति सुमंत (मराठी) को **नाटक** और गजन्फर इकबाल (उर्दू) को **निबन्ध** के लिए युवा पुरस्कार हेतु चुना गया। पुरस्कार के अन्तर्गत उत्कीर्ण ताम्रफलक और 50 हजार रुपए नकद शामिल हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त सभी 24 भाषाओं के लिए इन पुरस्कारों को घोषणा की गई। सर्वश्री रामजी तिवारी (हिन्दी), एम०एल० तंगप्पा (अंग्रेजी), महेन्द्र नारायण राम (मैथिली), पूर्ण शर्मा 'पूरन' (राजस्थानी), सतीश कुमार वर्मा (पंजाबी), भागीरथी नंद (संस्कृत), अतहर फारूखी (उर्दू), गीता उपाध्याय (नेपाली), हिरो ठाकुर (सिंधी), प्रशांत कुमार मोहंती (ओड़िया), जी० नंजुनंदन (तमिल), आर० वेंकटेश्वर राव (तेलुगु), पंकज ठाकुर (असमिया), ओइनम नीलकंठ सिंह (बांग्ला), स्वर्णप्रभा चैनारी(बोडो), शशि पठानिया (डोगरी), शालिनी टोपीवाला (गुजराती), के०के० नायर एवं अशोक कुमार (कन्नड़), अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी),

गुरुनाथ शिवाजी केलेकार (कोंकणी), आनंद (मलयालम), ई० सोनामणि (मणिपुरी), रवीन्द्रनाथ मुर्मू (संथाली) और शारदा साठे (मराठी) को अनुवाद पुरस्कार 2012 के लिए चुना गया। अनुवाद पुरस्कार के अन्तर्गत 50 हजार रुपए नकद और उत्कीर्ण ताम्रफलक शामिल हैं।

डॉ० शंकरदयाल सिंह स्मृति-सम्मान

नई दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर में आयोजित डॉ० शंकरदयाल सिंह जनभाषा सम्मान के भव्य समारोह की मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार थीं। प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं राजनीतिक स्व० शंकरदयाल सिंह की स्मृति में स्थापित जनभाषा सम्मान पहले-पहल अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति, अमेरिका को दिया गया है। सम्मान-स्वरूप प्रशस्ति-पत्र के साथ एक लाख रुपए की राशि भी दी गई। कार्यक्रम में लोकसभा सांसद श्री शत्रुघ्न सिन्हा ने लेखक-पत्रकार श्री रंजन कुमार की पुस्तक 'What... Why.... How To Do' का विमोचन भी किया।

डॉ० बदरनीथ कपूर सम्मानित

भोपाल में प्रसिद्ध कोशकार डॉ० बदरीनाथ कपूर को उनकी हिन्दी सेवा के लिए 2012 का 'श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान' प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें शब्दकोशों के सृजन में बहुमूल्य योगदान के लिए दिया गया।

सम्मान समारोह सम्पन्न

भोपाल के हिन्दी भवन में मध्य प्रदेश लेखक संघ के तत्त्वावधान में संघ का 11वाँ वार्षिक साहित्यकार सम्मान समारोह कुलपति डॉ० मोहनलाल छीपा के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री बटुक चतुर्वेदी ने की। श्री विमल भण्डारी के संचालन में सम्पन्न समारोह में मध्य प्रदेश लेखक संघ द्वारा सर्वश्री रमेश दवे को 'अक्षय आदित्य सम्मान', कुँवर किशोर टण्डन को 'सारस्वत सम्मान', मधुर कुलश्रेष्ठ को 'देवकीनंदन युवा साहित्यकार सम्मान', शंकर सोनाने को 'पुष्कर सम्मान', सावित्री चौरसिया को 'काशीबाई मेहता सम्मान', कुँवर उदय सिंह 'अनुज' को 'कस्तूरी देवी चतुर्वेदी लोकभाषा सम्मान', आजाद बिहारी वर्मा को 'चन्द्रप्रकाश जायसवाल बाल साहित्य सम्मान', हरिमोहन बुधौलिया को 'डॉ० सन्तोष तिवारी समीक्षा सम्मान', अशोक गीते को 'हरिओम शरण गीतकार सम्मान', देवेन्द्र जोशी को 'मालवी भाषा सम्मान', नीता श्रीवास्तव को 'कमला चौबे स्मृति लेखिका सम्मान' राघवेन्द्र शर्मा को 'अमित रमेश स्मृति मंच कवि सम्मान', महेश अग्रवाल को 'मेहमूद जकी गजल सम्मान' बालकृष्ण श्रॉफ को 'डॉ० वल्लभदास शाह अनुवादक सम्मान', आजाद मिश्र 'मधुकर' को 'पं० ब्रजवल्लभ आचार्य संस्कृतज्ञ सम्मान' सोमेश शर्मा को 'मालती बसंत नवलेखक सम्मान' से अलंकृत किया गया। सभी सम्मानित साहित्यकारों को सम्मान निधि, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न, अंगवस्त्र, श्रीफल आदि भेंट किए गए।

'समन्वय पुरस्कार'

विगत दिनों दिल्ली में आयोजित भारतीय भाषा महोत्सव के अवसर पर उड़िया भाषा के सुविख्यात कवि-लेखक श्री सीताकान्त महापात्र को उड़िया के साथ संथाली भाषा में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए इण्डिया हैबिटैट सेन्टर की ओर से पहले 'समन्वय भारतीय भाषा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। इसी के साथ भारतीय भाषाई समाचार-पत्र संगठन की ओर से 'समन्वय भाषा पत्रकारिता पुरस्कार' पत्रकार श्री कँवल भारतीय को दिया गया। इस निमित्त उन्हें 50 हजार रुपए की राशि और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

विनोद कुमार शुक्ल को 'परिवार' पुरस्कार

सुप्रतिष्ठित रचनाकार विनोद कुमार शुक्ल को उनके साहित्यिक अवदान के लिए 'परिवार' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कला, संस्कृति और साहित्य को समर्पित मुंबई की 'परिवार' संस्था प्रतिवर्ष इस पुरस्कार का आयोजन करती है। अब तक नौ कविता-संग्रह, चार उपन्यास और दो कहानी-संग्रहों के रचयिता विनोद कुमार शुक्ल को इस पुरस्कार के अन्तर्गत शॉल, श्रीफल, स्मृतिचिह्न और एक लाख रुपए की राशि प्रदान की गयी ।

गिरीश कर्नाड को 'तनवीर सम्मान'

कला एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला 'तनवीर सम्मान' प्रख्यात नाटककार एवं अभिनेता गिरीश कर्नाड को दिया गया। रूपवेद प्रतिष्ठान, पुणे की ओर से दिया जाने वाला यह सम्मान हर साल प्रसिद्ध अभिनेता श्रीराम लागू के पुत्र की याद में दिया जाता है।

सम्मान समारोह के अवसर पर कर्नाड ने कहा कि हालांकि उन्होंने कन्नड़ भाषा में काम किया है लेकिन उनकी जड़ें मराठी रंगमंच और संस्कृति से भी गहरी जुड़ी रहीं। प्रसिद्ध रंगमंच एवं फिल्म निर्देशक जब्बार पटेल ने कर्नाड को यह सम्मान दिया। मराठी रंगमंच कलाकार एवं लेखक प्रदीप वैद्य को इस समारोह में मराठी थिएटर में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

विजयदान देथा तथा अन्य राजस्थान रत्न से सम्मानित

राजस्थान की राज्यपाल मार्ग्रेट अल्वा, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और राजस्थान की पर्यटन, कला एवं संस्कृति मन्त्री बीना काक ने विगत दिनों जयपुर में एक गरिमामय समारोह में राजस्थान की सात विभूतियों को प्रथम राजस्थान रत्न सम्मान से सम्मानित किया। इनमें से चार को मरणोपरान्त यह सम्मान दिया गया।

साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले कन्हैया लाल सेठिया, लोक कला के संरक्षक कोमल कोठारी, गजल गायक जगजीत सिंह, लोक गायिका अल्लाह जिलाई बाई को मरणोपरान्त यह सम्मान दिया गया। राजस्थानी कला साहित्य के लिए वयोवृद्ध लेखक विजयदान देथा (बिज्जी), मोहन वीणा वादन के लिए पंडित विश्व मोहन भट्ट और राजस्थानी साहित्य व संस्कृति के लिए वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मी कुमारी चूंडावत को एक लाख रुपए का चेक, प्रशस्ति पत्र, राजस्थान रत्न और शॉल देकर सम्मानित किया गया।

डॉ० प्रतिभा राय को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

सुप्रसिद्ध भारतीय लेखिका डॉ० प्रतिभा राय को देश का सुप्रतिष्ठित साहित्य सम्मान 'भारतीय ज्ञानपीठ' प्रदान करने की घोषणा की गई है। वर्ष 2011 के लिए दिए जाने वाले इस सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान को पाने वाली प्रतिभा राय उड़िया भाषा की जानी-मानी साहित्यकार हैं। इससे पूर्व उन्हें वर्ष 1991 में मूर्तिदेवी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

ज्ञात हो कि डॉ० सीताकांत महापात्रा की अध्यक्षता में डॉ० प्रतिभा राय को यह सम्मान प्रदान करने का एक निर्णायक मण्डल द्वारा निर्णय लिया गया। इसके लिए डॉ० प्रतिभा राय को ग्यारह लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी।

नरेन्द्र कोहली मानद उपाधि से अलंकृत

हिन्दी साहित्य के सुविख्यात लेखक डॉ० नरेन्द्र कोहली को पिछले दिनों हरिद्वार में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से डी० लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया है। विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षान्त समारोह के अवसर पर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित 'तोड़ो, कारा तोड़ो' तथा 'अभ्युदय' जैसे शीर्षस्थ उपन्यास लेखन पर उन्हें अलंकृत किया। साथ ही इटली में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने वाले सुप्रसिद्ध भारतविद् मारको फेरिनी तथा जापान के शिक्षाविद् मत्सुदा यासु हीरो को वैदिक ज्ञान के उपयोग एवं समाजसेवा के लिए भी मानद उपाधियों से सम्मानित किया गया।

शिलांग में कवि रामआसरे सम्मानित

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् एवं पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय कवि सम्मेलन व सांस्कृतिक समागम में रामआसरे गोयल की तीसरा पुस्तक 'स्वगंधे' को पुरस्कृत किया गया तथा उनको 'डॉ० महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया।

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान 2013

विगत दिनों 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान 2013' कानपुर के प्रख्यात हिन्दीसेवी, लेखक एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० बद्रीनारायण तिवारी को राजस्थान की सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मण्डल' के तत्वावधान में आयोजित प्रभु श्री श्रीनाथजी के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर समारोह में प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप अभिनन्दन एवं प्रशस्ति पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की गयी।

विजय वर्मा कथा सम्मान : हेमंत स्मृति कविता सम्मान

यह पुरस्कार अपनी पारदर्शिता और गुणवत्ता को लेकर देश के अग्रणी पुरस्कारों में है। यह उद्‌गार समारोह अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार जगदम्बा प्रसाद दीक्षित ने हेमंत फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित विजय वर्मा कथा सम्मान एवं हेमंत स्मृति कविता सम्मान के अवसर पर व्यक्त किये।

इसके पश्चात 'सेज पर संस्कृत' के लिए विजय वर्मा कथा-सम्मान, जगदम्बा प्रसाद दीक्षित द्वारा मधु कांकरिया को एवं 'मेरी यात्रा का जरूरी सामान' के लिये डॉ० सुधीर सक्सेना द्वारा हेमंत-स्मृति कविता सम्मान, लीला मल्होत्रा राव को प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप 11,000 रुपये की धनराशि, स्मृति चिह्न, शॉल एवं श्रीफल प्रदान किया गया।

जीत थईल को डीएससी लिटरेचर पुरस्कार

विवादास्पद लेखक जीत थइल को इस साल का डीएससी (दक्षिण एशिया) लिटरेचर पुरस्कार दिया गया। पहली बार किसी भारतीय को यह पुरस्कार मिला है।

पिछले दिनों जयपुर स्थित डिग्गी पैलेस में आयोजित पुरस्कार समारोह में मशहूर अभिनेत्री शर्मिला टैगोर ने थईल को पचास हजार डालर की इनामी राशि और ट्राफी प्रदान की। इस अवसर पर कई लेखक और साहित्यकार उपस्थित थे। थईल को यह पुरस्कार उनके पहले उपन्यास 'नार्कोपोलिस' के लिए दिया गया है।

यू आर अनंतमूर्ति बुकर के लिए नामित

सुप्रख्यात कन्नड़ साहित्यकार यू आर अनंतमूर्ति को आगामी अंतर्राष्ट्रीय मैन बुकर पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। अनंतमूर्ति को दस अन्य लेखकों के साथ नामित किया गया है। 80 वर्षीय अनंतमूर्ति एकमात्र भारतीय हैं जो इस प्रतिष्ठित पुरस्कार की अन्तिम सूची में शामिल किए गए हैं। पिछले दिनों इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए लेखकों की अन्तिम सूची घोषित की गई।

नरेन्द्र कोहली को 'व्यास सम्मान'

प्रख्यात लेखक डॉ० नरेन्द्र कोहली को के०के० बिरला फाउण्डेशन द्वारा दिये जाने वाले 'व्यास सम्मान' से सम्मानित किया गया है। उन्हें ये सम्मान उपन्यास 'न भूतो न भविष्यति' के लिए मिला है।

इसके अन्तर्गत डॉ० कोहली को 2.50 लाख रुपये मिलेंगे। इस उपन्यास की रचना उन्होंने 2004 में की थी। उन्हें प्रदत्त इस सम्मान का निर्णय लखनऊ यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित की अध्यक्षता में चयन समिति ने किया है।

'लमही सम्मान' मनीषा कुलश्रेष्ठ को

हिन्दी की चर्चित कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ को वर्ष 2012 का प्रतिष्ठित 'लमही सम्मान' प्रदान करने की घोषणा की गई है। निर्णायक मण्डल के अनुसार, मनीषा कुलश्रेष्ठ सघन संवेदना, व्यापक सरोकार, सतर्क बौद्धिकता और रचनात्मक समृद्धि की दृष्टि से एक उल्लेखनीय कथाकार हैं। कश्मीर समस्या पर केन्द्रित उपन्यास 'शिगाफ' उके वैश्विक सरोकारों को व्यक्त करता है।

महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में दिया जाने वाला यह सम्मान मनीषा के लेखन में विशिष्ट कथा परम्परा का संवाहक प्रतीत होता है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

ब्रह्मा से असंतुष्ट कवि रचता है नया संसार

ब्रह्मा की दुनिया से असन्तोष होने पर कवि अपना संसार रचता है। इस नई सृष्टि में कवि वास्तविक दुनिया के शोषण, अन्याय और भूलों को दुरुस्त करता है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी दुनिया रची लेकिन ब्रह्मा की दुनिया की खामियों को मिटाने की कोशिश उनके यहाँ नहीं दिखती।

ये बातें आलोचक प्रो० अजय तिवारी ने कहीं। वे विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के राधाकृष्ण सभागार में हिन्दी विभाग एवं शब्दार्थ अकादमी की ओर से भवानी भाई की जन्मशती पर आयोजित दो दिनी संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में बोल रहे थे। अध्यक्षता कला संकाय अध्यक्ष प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने की।

कवि का किया जाए मूल्यांकन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित राधाकृष्णन सभागार में 'घनानंद का काव्य मर्म' पर बहस चली। वक्ताओं ने कहा कि कवि का मूल्यांकन किंवदंतियों के आधार पर नहीं बल्कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। शोध की कड़ी में धारा व प्रवृत्तियाँ भी होनी चाहिए। मुख्य वक्ता प्रो० रामदेव शुक्ल ने कहा कि घनानंद को रीतिकाल के शृंगारिक कवि के रूप में जानते हैं जबकि उन्होंने भक्ति साहित्य की रचना की है। घनानंद का भक्ति साहित्य तुलसीदास के विनय पत्रिका के समतुल्य है। मुख्य अतिथि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० पी० नाग ने शोध पर जोर दिया। प्रो० वासुदेव सिंह स्मृति न्यास के तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम में शोध पत्रिका 'नमन' का विमोचन भी किया गया। अध्यक्षता प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने की।

कविता में भी नाटक होता है : काशीनाथ

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज में 'तुलनात्मक साहित्य' विषयक द्वितीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का उद्‌घाटन हुआ। मुख्य अतिथि कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा कि कविता में भी नाटक होता है। उपन्यासों पर मंचन तो खूब हुए हैं। जननाट्य मंच ने नाटक को बहुत विस्तार दिया। भारत में लेखक की तुलना में निर्देशक अधिक महत्त्वपूर्ण है जबकि विदेशों में ऐसा नहीं है।

विशिष्ट अतिथि चिकित्सक प्रो० कमलाकर त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय रंगमंच जीवन्त है और रहेगा। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने कहा कि नाट्य कलाकार में परकाया प्रवेश की क्षमता होती है। श्रेष्ठ साहित्य व्यक्ति, समाज और जीवन की परख कराने का माध्यम बन जाता है।

त्रिशपथगा का विमोचन

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित राधाकृष्णन सभागार में डॉ० इरावती के उपन्यास 'त्रिशपथगा' का विमोचन किया गया। आयोजन हिन्दी व उर्दू विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया। विमोचन अवसर पर कृष्णमूर्ति फाण्डेशन के प्रो० पी० कृष्णा, कला संकाय प्रमुख प्रो० एस०एन० राय, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० बलिराज पाण्डेय, उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो० याकूब यावर व प्रो० कुमार पंकज आदि उपस्थित थे।

आध्यात्मिकता नहीं, इसलिए नरक है जीवन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय के अग्निवेश हॉल में 'व्यस्त जीवन व स्वास्थ्य में आध्यात्म' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। मेडिसिनल केमेस्ट्री विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय के प्रबन्धशास्त्र संकाय के प्रो० अनिल कुमार अग्रवाल ने कहा कि यह तो तय है कि हम सब आध्यात्मिक नहीं है। यदि आध्यात्मिक होते तो हर ओर नरक नजर नहीं आता।

आध्यात्म का अर्थ है शरीर और मन के उद्‌देश्य की तलाश। सर्वशक्तिमान सत्ता ने हमें दो महत्त्वपूर्ण औजार शरीर और मन दिया है। हम इसके उद्‌देश्य से भटक बस इसका पोषण करने में लगे हैं। अपनी भौतिक खोज में भगवान को भी मदद के लिए

अपील करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि आते ही स्वास्थ्य स्वत: उत्तम हो जायेगा। यही तो है आत्मज्ञान। अध्यक्षता प्रो० यामिनी भूषण त्रिपाठी ने की।

भारत में सांस्कृतिक आपातकाल : रुश्दी

अपनी पुस्तक 'सेटेनिक वर्सेज' के चलते विवादों के घेरे में आए भारतीय मूल के प्रख्यात उपन्यासकार सलमान रुश्दी का कहना है कि भारत में इस समय सांस्कृतिक आपातकाल का दौर है, जिसके चलते लेखकों, चित्रकारों और फिल्मकारों को निशाना बनाया जा रहा है। एक साक्षात्कार में रुश्दी ने कहा—राष्ट्रीय आपातकाल के उलट इसमें संस्कृति का विरोध किया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि साहित्यकार और कलाकार हथियार नहीं रखते। वे अपने साथ ऐसे लोगों को भी नहीं रखते, जो गली, मोहल्लों में उनकी किताब या फिल्म का विरोध करने वालों से लड़ सकें। उन्होंने कहा—''दुर्भाग्यवश जिम्मेदार लोग भी आपके अभिव्यक्ति के अधिकार को दबाने की कोशिश करते हैं।''

भूमण्डलीकरण और हिन्दी-कविता

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से आयोजित प्राध्यापक व्याख्यानमाला कार्यक्रम के अन्तर्गत विगत दिनों माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रो० बाबू जोसफ का व्याख्यान सम्पन्न हुआ। 'भूमण्डलीकरण और हिन्दी-कविता' विषयक व्याख्यान में प्रो० बाबू जोसफ ने कहा कि आज जब विश्व गाँव की परिकल्पना साकार हो रही है ऐसे में साहित्य की चुनौतियाँ और भी बढ़ गई हैं। कुमार अंबुज, वेदव्रत जोशी, राजेश जोशी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि की कविताओं पर सविस्तार बातचीत करते हुए डॉ० जोसफ ने कहा कि आज कविता की सबसे बड़ी आवश्यकता मानवता के पक्ष में खड़े होने की है। यह सच है कि कविता अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभा रही है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि सुखाडिया विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष प्रो० माधव हाड़ा ने कहा कि समय के साथ आ रहे बदलावों के प्रति यदि हम नकारात्मक रुख रखते हैं तो भी परिवर्तन होकर रहेगा।

डॉ० एस०के० मिश्रा ने हिन्दी-कविता पर बाजारवाद के प्रभाव की चर्चा की। कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ० प्रदीप पंजाबी ने कहा कि आज हम बाजार मुक्त समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं। आज के आर्थिक युग में बाजार हमारी आवश्यकता भी है।

विभागाध्यक्ष डॉ० मलय पानेरी ने विषय-प्रवर्तन करते हुए कहा कि भूमण्डलीकरण का प्रभाव आम आदमी पर भी पड़ रहा है तो इससे मनुष्य सापेक्ष साहित्य के मुक्ति का प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ० ममता पालीवाल ने भूमण्डलीकरण और साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों पर प्रकाश डाला।

'मेवाड़ दर्शन और स्वातन्त्र्यचेता महाराणा' ग्रन्थ का विमोचन

मुख्यमंत्री निवास रायपुर में साहित्यकार डॉ० बृजेश सिंह द्वारा लिखित ग्रन्थ 'मेवाड़ दर्शन और स्वातंत्र्यचेता महाराणा' का विमोचन मुख्य अतिथि डॉ० रमन सिंह, मुख्यमन्त्री छत्तीसगढ़ शासन एवं श्रीमती वीणा सिंह द्वारा किया गया।

महाराणा प्रताप साहित्य प्रसार पर उल्लेखनीय योगदान के लिए रविन्द्र प्रताप सिंह, संजय सिंह एवं एस०के० सिंह को 'महाराणा रत्न' अलंकरण से मुख्यमन्त्री डॉ० रमन सिंह द्वारा सम्मानित किया गया।

अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी थे डॉ० सम्पूर्णानन्द

वाराणसी में विभिन्न संगठनों ने डॉ० सम्पूर्णानन्द की 123वीं जयन्ती मनायी। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ० सम्पूर्णानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा की गयी। इस दौरान उनके राजनीतिक कार्यकाल के बारे में विस्तार से चर्चा की गई।

नागरी प्रचारिणी सभा में आयोजित जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए पं० धर्मशील चतुर्वेदी ने कहा कि देश व प्रदेश में डॉ० सम्पूर्णानन्द का जो योगदान है वह स्मरणीय है। पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने कहा कि डॉ० सम्पूर्णानन्द के व्यक्तित्व में राजनीति के साथ नैतिकता का समन्वय था। प्रो० गिरीश चन्द्र चौधरी, श्रीमती भगवन्ती सिंह, सुदामा तिवारी 'साँड़ बनारसी', डॉ० पवन कुमार शास्त्री, डॉ० रामप्रकाश शाह, डॉ० रामअवतार पाण्डेय सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किया। संचालन डॉ० जीतेन्द्र नाथ मिश्र ने किया। इसी क्रम में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के बी०एड० विभाग की ओर से संस्था के संस्थापक डॉ० सम्पूर्णानन्द की जयन्ती मनायी गयी। इसमें विभागाध्यक्ष प्रो० प्रेमनारायण सिंह, प्रो० सुभाषचन्द्र तिवारी, प्रो० मीरा दुबे, प्रो० सोमनाथ त्रिपाठी, डॉ० शैलेश मिश्र सहित विद्यार्थियों ने भी विचार व्यक्त किया। तत्पश्चात् कुलपति प्रो० बिंदा प्रसाद मिश्र ने भी डॉ० सम्पूर्णानन्द की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया।

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी जयंती समारोह

मुजफ्फरपुर में बेनीपुरी चेतना समिति न्यास के तत्त्वावधान में श्रीरामकृष्ण बेनीपुरी का 114वाँ जन्मदिन उनके जन्मस्थान बेनीपुर में तथा मुजफ्फरपुर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री बेनीपुरी द्वारा अनूदित अंग्रेजी के चार सुप्रसिद्ध कवियों कीट्स, शेली, बायरन और वड्र्सवर्थ की कविताओं का संग्रह 'ट्यूलिप्स' का लोकार्पण प्रख्यात कवि-पत्रकार श्री सुकान्त नागार्जुन द्वारा किया गया। इसके बाद 'समाजवाद और सत्ता' विषय पर एक परिचर्चा आयोजित की गई।

75 के हुए कथाकार काशीनाथ सिंह

कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं। उनकी दीर्घायु की कामना के साथ हिन्दी विभाग (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने उनका सम्मान किया। इससे अभिभूत प्रो० सिंह ने साफगोई से स्वीकारा कि पाठकों की तटस्थ और निर्मम आलोचना ही रचनाकार की खुराक है।

संचालन करते हुए प्रो० अवधेश प्रधान ने कहा कि प्रो० सिंह ने हमेशा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। श्री दिनेश कुशवाहा, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, डॉ० गया सिंह, डॉ० आशीष त्रिपाठी, महेश कटारे आदि ने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन प्रो० बलिराज पाण्डेय ने किया।

जमीन और प्रकृति से भी जोड़ती है भोजपुरी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भोजपुरी व जनपदीय भाषाओं को मजबूत करने की पहल की गई। इसके लिए विगत दिनों भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में 15 दिनी कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। मंगलवार को भोजपुरी सम्मेलन के अन्तर्राष्ट्रीय महासचिव अरुणेश नीरन ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। कहा कि जमीन और प्रकृति से जुड़ाव का माध्यम भोजपुरी और दूसरी जनपदीय भाषाएँ ही हैं जो उस संस्कृति का निर्माण करती है। केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदानंद शाही ने कहा कि अपनी जड़ों को मजबूत रखने के लिए भोजपुरी व जनपदीय अध्ययन की सबसे अधिक जरूरत है। संयोजक प्रो० अवधेश ने कहा कि जनपदीय अध्ययन की संकल्पना नई नहीं है। अध्यक्षता करते हुए कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने भोजपुरी को मुख्य धारा में ले जाने की वकालत की।

ग्रन्थों ने समाज पर डाले हैं दूरगामी प्रभाव

एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज (काशी हिन्दू विश्वविद्याय) में विगत दिनों पुस्तकालय एवं ग्रन्थों के महत्व पर चर्चा हुई। वक्ताओं का कहना था कि संसार की सभी क्रान्तियाँ ग्रन्थों की ही देन हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र हो, काल मार्क्स की दास कैपिटल हो या गीता, प्रत्येक ने समाज पर दूरगामी प्रभाव डाला।

सूचना विज्ञान के पाँचवें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि नैक के उप सलाहकार डॉ० एम०एस० श्याम सुन्दर ने गुणवत्ता संवर्धन पर जोर दिया। कहा कि गुणवत्ता बनाये रखने में शिक्षकों का दायित्व बढ़ जाता है।

इसी क्रम में पूर्व केन्द्रीय सूचना आयुक्त डॉ० ओ पी केजरीवाल ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुस्तकों का काफी महत्व है। पुस्तकालयाध्यक्ष ज्ञान के संवाहक होते हैं। उन्होंने

कहा कि दुनिया में सभी क्रान्तियाँ पुस्तकों की देन हैं। यदि किसी पुस्तकालय का पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकों को ठीक से रखता है तो वह विद्यार्थी और पाठकों का बहुत बड़ा हित करता है।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह सम्पन्न

विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मन्त्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्त्वावधान में फेनिक्स स्थित इन्दिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सभागार में 'विश्व हिन्दी दिवस 2013' समारोह का भव्य आयोजन किया गया। मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मन्त्री डॉ० वसन्त कुमार बनवारी समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि द्वारा सचिवालय की वार्षिक पत्रिका 'विश्व हिन्दी पत्रिका' के चौथे अंक (प्रिण्ट तथा इलेक्ट्रॉनिक संस्करण) का लोकार्पण किया गया। इसके साथ ही सचिवालय की वेबसाइट पर 'हर दिवस हिन्दी दिवस' नामक विशेष पृष्ठ का लोकार्पण भी किया गया, जिसमें तिथिगत रूप से हिन्दी से जुड़े विद्वानों एवं साहित्यकारों पर आधारित सूचनाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी। मॉरीशस में हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में लम्बे समय से सक्रिय श्री विजय कुमार बिहारी द्वारा संकलित एक 'हिन्दी-फ्रेंच शब्दकोश' का भी लोकार्पण किया गया।

विश्वकोशीय लेखक की परम्परा में हैं डॉ० रामविलास शर्मा—नामवर सिंह

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा 'बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का सन्दर्भ' शृंखला के अन्तर्गत प्रगतिशील लेखक संघ, उत्तर प्रदेश के सहयोग से हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक 'रामविलास शर्मा एकाग्र' पर दो दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में विद्वत् वक्ताओं ने रामविलास शर्मा की 'भाषा और समाज', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण', 'हिन्दी जाति का साहित्य', 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद', 'भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद', 'भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश' सहित कई रचनाओं पर सलीके से परत-दर-परत पड़ताल कर गम्भीर विमर्श किया।

हिन्दी के शीर्ष आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि राहुल सांकृत्यायन, वासुदेव शरण अग्रवाल और डॉ० रामविलास शर्मा तीनों विश्वकोशीय लेखक हैं, जिन्होंने इतिहास, साहित्य, समाज, संस्कृति और राजनीति पर खूब लिखा। डॉ० शर्मा में मार्क्सवाद की गहरी आस्था थी। उन्होंने भारत के सन्दर्भ में मार्क्सवाद की नयी व्याख्या कर अपने कर्म और रचनात्मक उड़ान के लिए जगह बनायी। आर्यों के आगमन के सन्दर्भ में रामविलास जी ने जो लिखा, उस पर कुछ इतिहासकार असहमति जताते हैं। उनके लेखन का परिदृश्य अत्यन्त विराट और विस्तृत है। रामविलास जी के लेखन को पहचानना व उससे संवाद करना किसी भी महत्त्वपूर्ण लेखक की आज पहली जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने अपनी साहित्य सर्जना में भाषा-परम्परा, भाषा-विज्ञान, उपनिवेशवाद, पूंजीवाद, राष्ट्रीय आन्दोलन, आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता जैसे तमाम वैचारिक बहसों को उठाया है। वह भारत के वर्तमान संस्कृति और हिन्दी प्रदेशों की जीवन्त विरासतों की ओर हमारा ध्यान बार-बार खींचते हैं।

प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव अली जावेद ने कहा कि रामविलास शर्मा के साथ ही एहतेशाम हुसैन, मंटो, अली सरदार जाफरी की भी जन्मशती है और हमें बारी-बारी से देश के विभिन्न शहरों में, हो सके तो विदेशों में भी जन्मशती समारोहों का आयोजन कर इन विभूतियों के योगदान को याद करना चाहिए। बतौर मुख्य अतिथि महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय ने डॉ० रामविलास शर्मा के विपुल लेखन की विशद चर्चा की।

अध्यक्षीय वक्तव्य वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० चौथीराम यादव ने दिया।

साहित्यकार दूधनाथ सिंह की अध्यक्षता में 'भाषा और समाज' विषय पर आधारित द्वितीय अकादमिक सत्र में अरुण होता, संजय कुमार, रामचन्द्र व वैभव सिंह ने विमर्श किया।

'मार्क्सवादी आलोचना : अंतर्विरोध और विकास' विषय पर आयोजित तीसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रदीप सक्सेना ने कहा कि आज भारत में जो सबसे बड़ी समस्याएँ हैं और साहित्य में जो बड़ी अस्मिताएँ हैं—नारीवाद, दलितवाद, आदिवासी—सभी शासकवर्ग के सामंतवाद के साथ गठजोड़ हैं। इस सत्र में डॉ० कुमार पंकज, डॉ० बजरंग बिहारी तिवारी, रघुवंश मणि, भारत भारद्वाज, मूलचंद गौतम ने विचार व्यक्त किये।

'हिन्दी जाति की अवधारणा : साहित्य और इतिहास' पर आधारित चौथे सत्र की अध्यक्षता 'इतिहासबोध' के सम्पादक लाल बहादुर वर्मा ने की। साहित्यकार चौथीराम यादव ने बीज वक्तव्य दिया। वक्ता के रूप में राजेन्द्र राजन, राजकुमार एवं कृष्ण मोहन ने रामविलास शर्मा की हिन्दी जाति की अवधारणा पर विमर्श किया।

डॉ० तस्नीम का कहानी संग्रह 'पत्थर हुए लोग' लोकार्पित

अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच के तत्त्वावधान में आयोजित 25वें अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन-2012 के अवसर पर डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम' के कहानी संग्रह 'पत्थर हुए लोग' का लोकार्पण हुआ। यह कार्यक्रम बिहार राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ भवन, जमाल रोड, पटना में आयोजित किया गया था।

विचारधारा का अन्त नहीं होता

भोपाल। आज के दौर में विचारधारा के सवाल ज्यादा जटिल हो गये हैं। विचारधारा लेखक की प्रॉपर्टी है रचना की नहीं। रचनात्मक व्यवहार में विचारधारा विन्यस्त होती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सत्ताओं का अन्त होता है विचारधारा का नहीं।

यह बात वरिष्ठ कवि आलोचक राजेश जोशी ने विगत दिनों प्रो० कमला प्रसाद की याद में आयोजित पहले सत्र 'आलोचना का लोकतंत्र' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही।

प्रगतिशील वसुधा तथा प्रो० कमलाप्रसाद स्मृति सांस्कृतिक संस्थान भोपाल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के पहले सत्र को सम्बोधित करते हुए वसुधा के सम्पादक स्वयंप्रकाश ने कहा कि प्रो० कमलाप्रसाद की संगठनात्मक और आलोचकीय प्रतिबद्धताओं का नये सिरे से मूल्यांकन किए जाने की बहुत जरूरत है। साथ ही साहित्य व आलोचना के अंतर्संबंधों को नई स्थितियों के साथ सोचना होगा।

आलोचक वीरेन्द्र यादव ने कहा कि कोई भी साहित्यिक रचना महज रचनात्मक निर्माण नहीं होती बल्कि सामाजिक व वैचारिक निर्माण भी होती है।

कार्यक्रम के अन्तिम चरण और आलोचना के सम्बन्ध विषय पर वरिष्ठ आलोचक कवि विजयकुमार ने कहा कि दुर्भाग्यवश आलोचना कर्मकाण्ड बन चुकी है। आलोचना एक संस्थान बन चुकी है। इसीलिए आलोचना की विश्वसनीयता कटघरे में खड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि लेखन में क्षणिक सनसनी और वाहवाही के बजाए गम्भीर विमर्श और विचार की दरकार होनी चाहिए।

बाबू गुलाबराय की 125वीं जयन्ती मनायी गयी

हिन्दी साहित्य को नयी ऊचाईयों पर पहुँचाने वाले हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार बाबू गुलाबराय की 125वीं जयन्ती 10 फरवरी को बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान के तत्वावधान में इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर में मनायी गयी। समारोह का उद्घाटन भारत के पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने किया। डॉ० जोशी ने कहा कि उन्होंने छात्र जीवन में बाबूजी के निबन्ध पढ़े थे पर विज्ञान का छात्र होने के कारण वे हिन्दी साहित्य से दूर हो गये। बाबू गुलाबराय के निबन्धों में जितनी गम्भीरता थी उतना ही उनको समझना सरल था। बाबू गुलाबराय ने हिन्दी को उस समय ऊँचाइयों पर पहुँचाया जब उसका चलन व्यापक नहीं था।

समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध निबन्धकार एवं समालोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने की। समारोह में चेन्नै से आये चंदामामा के पूर्व सम्पादक डॉ० बाल शौरी रेड्डी, हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार डॉ०

परमानन्द पांचाल तथा राज्यसभा के पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डे विशिष्ट अतिथि थे तथा प्रो० कृष्णदत्त पालीवाल मुख्य वक्ता थे।

इस अवसर पर भारतीय साहित्य को संरक्षित करने के उद्देश्य से बनायी गयी वेबसाइट literatureofindia.org का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने किया। जिसका उद्देश्य न केवल बाबू गुलाबराय के साहित्य को इन्टरनेट पर उपलब्ध कराना है बल्कि कालिदास से लेकर मुंशी प्रेमचंद तक भारत की सभी साहित्यिक विभूतियों का साहित्य जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। इसके साथ बाबू गुलाबराय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक स्मारिका और मनोविज्ञान पर लिखी गयी बाबू गुलाबराय कृत पुस्तक 'मन की बातें' का लोकार्पण भी किया गया।

समारोह में प्रो० नित्यानंद तिवारी को उनके हिन्दी साहित्य में योगदान के लिए बाबू गुलाबराय सम्मान से 11,001 रुपये तथा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में बाबूजी के पुत्र विनोद शंकर गुप्त अन्य परिवारजन, प्रसिद्ध कवि सोम ठाकुर आदि उपस्थित थे।

'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पाँचवाँ भारतीय लेखक शिविर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी०जी० कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय मनीषा के प्रतीक पुरुष पं० विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस (मकर संक्रान्ति) के अवसर पर 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' विषय पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पंचम भारतीय लेखक शिविर रथयात्रा, वाराणसी के कन्हैयालाल गुप्ता मोतीवाला स्मृति भवन एवं श्री बलदेव पी०जी० कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी के सभागार में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न प्रान्तों के 200 से अधिक विद्वानों, रचनाकारों, प्रतिभागियों और स्थानीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मध्य प्रदेश कला परिषद के अध्यक्ष कपिल तिवारी ने कहा कि परम्परा को जाने बिना उसका विरोध जितना घातक है उतना ही घातक है उसके बिना उसके ध्वजाधारी की भूमिका निभाना। भारतीय लोक ने ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के अपरिमित शास्त्रों की रचना की है।

उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री पृथ्वीश नाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ ने किया।

सत्र की अध्यक्षता भोजपुरी-मैथिली अकादमी के निदेशक एवं सुभारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव ने की।

प्रथम अकादमिक सत्र में 'लोक और शास्त्र के स्वरूप और सम्बन्ध परस्पर' पर गहन विमर्श हुआ। सत्र की अध्यक्षता माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० अच्युतानन्द मिश्र ने की।

दूसरे अकादमिक सत्र का विषय था—'लोक में शास्त्र : शास्त्र में लोक', तीसरा सत्र युवा समवाय के रूप में सम्पन्न हुआ। सत्र की अध्यक्षता प्रो० बलिराज पाण्डे ने की।

आयोजन के दूसरे दिन की शुरुआत पं० विद्यानिवास स्मृति संवाद और स्मृति सम्मान से हुई। इस सत्र में 'तापसी' उपन्यास के लिए कवि, कथाकार, रंगर्मी डॉ० कुसुम अंसल को पंचम पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। जिसके अन्तर्गत पंचपुस्तक, पंचमाल, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न, अंगवस्त्र, उत्तरीय और रु० 21,000 की राशि पंचवैदिकों के स्वस्त्यय के साक्ष्य में भेंट की गयी।

चौथे सत्र में साहित्य के विशेष सन्दर्भ में लोक और शास्त्र के सम्बन्ध में विचार किया गया। सत्र के अध्यक्ष थे प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी।

पंचम सत्र कला के सन्दर्भ में लोक और शास्त्र के विवेचन पर केन्द्रित था। इस सत्र के अध्यक्ष थे श्री कपिल तिवारी। पंचम सत्र में वसन्त निरगुणे की पुस्तक 'लोकप्रतीक' का लोकार्पण पं० कमलेशदत्त त्रिपाठी, कपिल तिवारी एवं अच्युतानन्द मिश्र ने किया।

तीसरे दिन 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' पर चर्चा के साथ ही समापन समारोह का आयोजन श्री बदलेदव पी०जी० कॉलेज के सभागार में सम्पन्न हुआ।

अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ० उदयन मिश्र ने, संचालन प्रकाश उदय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ० दयानिधि मिश्र ने किया।

राष्ट्रीय चेतना के काव्य पर संगोष्ठी

चेन्नई के प्रसिद्ध संस्थान साहित्यानुशीलन समिति ने अपनी स्थापना के इकसठवें वर्ष में विशेष साहित्यिक समावेश का आयोजन किया। नगर के गोपालपुरम स्थित राजेन्द्र बाबू भवन में आहूत संगोष्ठी में भारतीय भाषाओं के प्रमुख राष्ट्रीय रचनाकारों के काव्यावदान पर प्रकाश डाला गया। समिति के संरक्षक और बिहार एसोसिएशन के अध्यक्ष व वयोवृद्ध समाजसेवी श्री शोभाकान्तदास ने समारोह की अध्यक्षता की। समिति के अध्यक्ष डॉ० इन्दरराज बैद ने कहा कि भाषाओं की विविधता के बावजूद उनमें राष्ट्रीय और मानवीय चेतना का एक ही स्वर सुनाई पड़ता है। इस अवसर पर चेन्नई के जाने-माने विद्वान डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी, श्रीमती कौशल्या वरदराजन, डॉ विद्या शर्मा, डॉ सविता धुडकेवार, डॉ० उत्सला किरण ने हिन्दी उर्दू, मराठी, तमिल भाषाओं के कवि और काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विवेचन करते हुए अपने शोध-पत्रों का वाचन किया।

वाराणसी में 'अंतर-पथ'

''हिन्दी लेखन के क्षेत्र में अब स्त्रियों की आवाज अनसुनी नहीं है। वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की तरह विभिन्न विधाओं में अपनी सशक्त अभिव्यक्ति से लेखन के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। रचना शर्मा ऐसी ही कवयित्रियों में हैं जिन्होंने स्त्री की दुनिया को बारीकी से अपनी कविताओं में चित्रित किया है तथा हिन्दी कविता के क्षेत्र में मजबूती से पदार्पण किया है।''—ये बातें पिछले दिनों हिन्दी के जाने-माने कवि अष्टभुजा शुक्ल ने वाराणसी में कवयित्री रचना शर्मा के पहले कविता-संग्रह 'अंतर-पथ' का लोकार्पण करते हुए कही।

अशोक वाजपेयी की पुस्तकें लोकार्पित

कवि और आलोचक अशोक वाजपेयी के 73वें जन्मदिन 16 जनवरी को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में उनकी चार सद्य: प्रकाशित पुस्तकों के अलावा उन्हें लिखे गए पत्रों का एक संकलन का लोकार्पण हुआ।

प्रभा खेतान की आत्मकथा का अंग्रेजी अनुवाद लोकार्पित

पिछले दिनों सम्पन्न जयपुर साहित्य उत्सव के दौरान प्रख्यात लेखिका और समाजसेविका डॉ० प्रभा खेतान की चर्चित आत्मकथा के अंग्रेजी अनुवाद 'ए लाइफ अपार्ट' का लोकार्पण स्काटलैण्ड की लेखिका अमिनाता फोना और शर्मिला टैगोर ने किया। अनुवाद इरा पांडे ने किया है।

पुस्तकालय संस्कृति को दें बढ़ावा

पलक्कड़, केरल में प्रख्यात फिल्म-निर्माता अदूर गोपालकृष्णन ने युवाओं में पढ़ने की आदत के प्रोत्साहन हेतु पुस्तकालय संस्कृति को बढ़ावा देने की वकालत की है। केरल पुस्तकालय परिषद के एक कार्यक्रम में गोपालकृष्णन ने कहा कि हालांकि पढ़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है पर पुस्तकालयों की संख्या कम होती जा रही है। इसके कारणों को पहचानने की जरूरत है और पुस्तकालय संस्कृति को वापस लाने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पुस्तकालयों की संख्या कम होने से कला को भी नुकसान हुआ है क्योंकि पुस्तकालय न सिर्फ पढ़ने के स्थान हैं बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र होते थे। अदूर ने कहा कि अच्छे नाटकों के लिखे जाने और मंचन की आवश्यकता है। सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र होने के नाते पुस्तकालय इसमें अहम भूमिका निभा सकते हैं। अध्यक्षता पी०के० हरिकुमार ने की।

पुस्तक परिचय

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

भूमिका :

आचार्य रामचन्द्र तिवारी

प्रथम विश्वविद्यालय प्रकाशन

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 556

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-955-8

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-956-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के युग-निर्माता, विचारक एवं आचार्य हैं। जिस समय हिन्दी के साहित्यकार भाषा और साहित्य के सामान्य प्रश्नों को सुलझाने का बाल प्रयास कर रहे थे, उस समय शुक्लजी अपने साहित्यिक परिवेश का अतिक्रमण कर साहित्य दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, विज्ञान आदि अनेक क्षेत्रों की नवीनतम उपलब्धियों को आत्मसात करके हिन्दी के मौलिक काव्यशास्त्र की आधारशिला रखकर विचार और चिन्तन के क्षेत्र में एक नये युग का निर्माण कर रहे थे। नि:सन्देह एक कोश निर्माता, इतिहासकार, निबन्ध लेखक, अनुवादक, आलोचक, सम्पादक और रचनाकार के रूप में आचार्य शुक्ल का अवदान अन्यतम है। इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने पथ-प्रवर्तन का कार्य किया है।

यह सर्वस्वीकृत तथ्य है कि आचार्य शुक्ल ने हिन्दी-साहित्य के इतिहास का एक 'पक्का और व्यवस्थित ढाँचा' पहली बार खड़ा किया है। आचार्य शुक्ल का उद्देश्य भी यही था जिसमें वे पूर्णत: सफल हुए हैं। सीमित समय में अपर्याप्त सामग्री को सामने रखकर हिन्दी-साहित्य का जो इतिहास आचार्य शुक्ल ने प्रस्तुत किया है, उससे व्यवस्थित, प्राणवान्, प्रभावी और व्यक्ति-वैशिष्ट्य-प्रतिपादक इतिहास आज तक दूसरा नहीं लिखा गया है। **— डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

इतिहास-लेखन में रामचन्द्र शुक्ल एक ऐसी क्रमिक पद्धति का अनुसरण करते हैं जो अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करती चलती है। विवेचन में तर्क का क्रमबद्ध विकास ऐसे है कि तर्क का एक-एक चरण एक दूसरे से जुड़ा हुआ, एक दूसरे में से निकलता दिखेगा। इसीलिए पाठक को उस पर चलने में सुगमता होती है, जटिल से जटिल प्रसंग आसानी से हृदयंगम हो जाता है।

— रामस्वरूप चतुर्वेदी

रंगभूमि

प्रेमचंद

भूमिका :

प्रो० गोपाल राय

प्रथम विश्वविद्यालय प्रकाशन

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 456

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-964-0

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-965-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'रंगभूमि' एक राजनीतिक उपन्यास है। राजनीतिक उपन्यास लिखने के लिए राजनीतिक यथार्थ और उसकी जटिलताओं की अच्छी जानकारी और समझ नितान्त आवश्यक है। 'रंगभूमि' का रचना-काल अक्टूबर, 1922 ई० से अगस्त, 1924 ई० के बीच है। इस समय तक आते-आते जहाँ एक तरफ ब्रिटिश शासन की जड़ें बहुत मजबूत हो चुकी थीं, वहाँ दूसरी तरफ उसके खिलाफ स्वाधीनता संग्राम भी तेज होने लगा था। 1920 ई० में ही गाँधीजी ने मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु चित्तरंजन दास और लाला लाजपत राय के सहयोग से सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ कर दिया था। इस आन्दोलन के कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे थे : स्वदेशी का प्रचार, विदेशी वस्तुओं तथा सरकारी स्कूल-कॉलेजों और सरकारी नौकरियों का परित्याग, अदालतों तथा कौंसिलों का बहिष्कार, राष्ट्रीय विद्यालयों-महाविद्यालयों की स्थापना, अस्पृश्यता-निवारण, साम्प्रदायिक एकता कायम करना आदि। इसे सफल बनाने के लिए गाँधीजी ने सारे देश का व्यापक दौरा किया। इसी सिलसिले में 8 फरवरी, 1921 ई० को गोरखपुर में गाँधीजी का भाषण हुआ और 15 फरवरी, 1921 ई० को प्रेमचंद ने अपनी लगभग 21 वर्षों की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

'रंगभूमि' में प्रेमचंद ने अपने समय के राजनीतिक यथार्थ का चित्रण उसकी समस्त जटिलता, गहरायी और व्यापकता में किया है। उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद खुल्लमखुल्ला अँगरेजी सरकार के खिलाफ बगावत नहीं करते। कदाचित् उनकी पारिवारिक परिस्थितियाँ और मानसिकता इसके अनुकूल नहीं थी। गाँधीजी द्वारा 1920 ई० में चलाये गये सत्याग्रह आन्दोलन या प्रस्तावित सविनय अवज्ञा आन्दोलन को—उनके तहत अपनाये गये कार्यक्रमों को—प्रेमचंद उसी रूप में चित्रित नहीं करते। 'रंगभूमि' के तीसरे परिच्छेद में एक 'सेवा समिति' का चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसके संचालक, संरक्षक और नीति-निर्धारक रानी जाह्नवी, कुँवर भरत सिंह, डॉ० गांगुली आदि हैं। इनके अन्तर्गत युवक स्वयंसेवकों का एक दल है जिसका नेता कुँवर भरत सिंह का पुत्र विनय सिंह है। आरम्भ में इस सेवा समिति का उद्देश्य रखा गया है : मेले-ठेले में यात्रियों की सहायता करना, कोई दुर्घटना हो जाने पर पीड़ित व्यक्तियों को मदद पहुँचाना या कहीं अकाल वगैरह पड़ जाने पर अकालपीड़ितों की सहायता करना। किसी भी कल्याणधर्मी राज्य (वेलफेयर स्टेट) में ये कार्य सरकार के होते हैं, पर ब्रिटिश सरकार इसे अपना उत्तरदायित्व नहीं मानती थी। सरकार इस उद्देश्य से स्थापित गैरसरकारी संस्थाओं पर कोई प्रतिबन्ध तो नहीं लगाती थी, पर उन्हें सन्देह की दृष्टि से अवश्य देखती थी। सरकार को सदा शंका बनी रहती थी कि इस प्रकार की संस्थाएँ कहीं राजनतिक रूप न ले लें। जाहिर है कि साहित्य में ऐसी संस्थाओं के चित्रण पर भी कोई कानूनी प्रतिबन्ध नहीं था, अत: प्रेमचंद को अपने राजनीतिक विचारों के चित्रण के लिए यही मार्ग सुकर और व्यावहारिक लगा।

हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास

सत्यनारायण त्रिपाठी

षष्ठ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 284

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-966-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास को सन्तुलित रूप में प्रस्तुत करना इस कृति का लक्ष्य है। हिन्दी का विकास वस्तुत: डिंगल, ब्रजी, अवधी और खड़ी-बोली हिन्दी के साहित्यिक रूपों का इतिहास है। डिंगल-काव्यों से लेकर आधुनिक हिन्दी नयी कविता तक के भाषारूपों के आधार पर इस विकास की रूप-रेखा प्रथम बार विस्तृत रूप में इस कृति में स्पष्ट की गयी है। इस विकासात्मक अध्ययन में भाषाओं के साहित्यिक रूपों के साथ उनके कथ्यरूपों का भी विवेचन किया गया है और विकास के उत्थानों के लिए कालपरक नामों के अतिरिक्त भाषा परक नाम भी सुझाए गए हैं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के वर्गीकरण पर विचार करते समय लेखक ने डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के वर्गीकरणों की सम्यक् परीक्षा करके उनकी सीमाओं का निर्देश किया है। हिन्दी ध्वनियों का ऐतिहासिक विवेचन उसकी विकासात्मक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है। इन प्रवृत्तियों का उद्घाटन इस प्रयास की अपनी विशिष्टता है। व्याकरणिक विकास के

सन्दर्भ में किया गया हिन्दी प्रत्ययों का वर्गीकरण भी इस कृति की नवीनता है।

मूल कृति का प्रणायन उन्नीस सौ चौंसठ ई० में हुआ था। 1964 के बाद के इस लम्बे अन्तराल में हिन्दी भाषा का बहुआयामी विकास हुआ और उसके स्वरूप तथा विभिन्न समस्याओं को लेकर बहुत कुछ सार्थक और स्तरीय लिखा गया है। यह सब देखते हुए प्रस्तुत कृति को नये और अधुनातन रूप में प्रस्तुत किया गया है जो मूल कृति का संशोधित एवं संवर्धित अद्यतन रूप है। इसमें पाँच नये प्रकरण सम्मिलित किए गए हैं। इनमें से पाँचवें में हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूपों का प्रयोग के आधार पर निरूपण हुआ है। साथ ही हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख रूपों की विवेचना की गई है। अन्त में विभिन्न दृष्टियों से हिन्दी के मानक रूप का निर्धारण है।

हिन्दी ध्वनियों का विवेचन व्याकरण और ध्वनि-विज्ञान के सिद्धान्तों के आलोक में पहले किया गया था। प्रस्तुत संस्करण के नवें प्रकरण में स्वनिम-सिद्धान्त के अनुसार हिन्दी स्वनिमों का निरूपण नया परिवर्धन है। सोलहवाँ प्रकरण नया है और इसमें हिन्दी पदरूपों का रूपिम-विज्ञान की दृष्टि से स्वतन्त्र रूप से अध्ययन किया गया है। सत्रहवाँ प्रकरण भी नया है और इसका सम्बन्ध हिन्दी वाक्यों के निरूपण से है। इसमें हिन्दी वाक्यों का अध्ययन वाक्य-विज्ञान और पदिम-सिद्धान्त के आधार पर हुआ है। अन्तिम नया प्रकरण उन्नीसवाँ नागरी के मानकीकरण से सम्बद्ध है। इसके अन्तर्गत अब तक के उपलब्ध प्रमुख मतों और साक्ष्यों के आधार पर हिन्दी लिपि (नागरी का वर्तमान रूप) के मानक रूप की समस्या पर विचार करते हुए प्रामाणिक निष्कर्ष प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है।

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

चतुर्थ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 576

सजि. : रु० 500.00 **ISBN : 978-81-7124-960-2**

अजि. : रु० 275.00 **ISBN : 978-81-7124-961-9**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संस्कृत साहित्य के इतिहास को विषय बनाकर अनेक ग्रन्थ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में पिछले दो सौ वर्षों में लिखे गये हैं। संस्कृत साहित्य के बहुश्रुत अध्येता प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी का यह ग्रन्थ इस विषय में कतिपय नयी कड़ियाँ जोड़ता है और नये वातायन खोलता है। इसकी एक विशेषता संस्कृत साहित्य की विकास-यात्रा का उद्भवकाल, स्थापनाकाल, समृद्धिकाल और विस्तारकाल—इन चार क्रमिक सोपानों में विभाजन है। इस विभाजन के द्वारा इसमें वास्तव में एक 'अभिनव' इतिहास-दृष्टि उन्मीलित हुई है। यहाँ अनेक ऐसे श्रेष्ठ काव्यों का परिचय जोड़ा गया है, जो अब तक उपेक्षित या अल्पचर्चित रहे हैं। कई अज्ञात या उपेक्षित कृतियों व कृती कृतिकारों के साथ अनेक अल्पपरिचित या अज्ञातप्राय कवियों का भी परिचय यहाँ दिया गया है, जो महत्त्वपूर्ण हैं। संस्कृत साहित्य की परम्परा निरन्तर विकसित होती हुई परम्परा है। १०वीं शती के पश्चात् संस्कृत काव्य के इतिहास को पश्चिमी विद्वानों ने ह्रास का युग मान कर उस पर मौन रखा। यह परम्परा भारतीय संस्कृत विद्वानों के रचे गये संस्कृत साहित्य के इतिहासों में भी प्रचलित रही है। इसी प्रकार मध्यकालीन गद्य को अनदेखा किया जाता रहा है। कथा साहित्य की सम्पन्न परम्परा परवर्ती शताब्दियों में विकसित होती रही है। यह पुस्तक संस्कृत साहित्य की अनेक उपेक्षित परम्पराओं का भी आकलन प्रस्तुत करती है। इस इतिहास के लेखक ने सप्रमाण यह प्रदर्शित किया है कि संस्कृत कवियों ने अपने समय को अपनी रचनाओं में अनेक छवियों में व्यंजित किया है। संस्कृत कवियों के समकालिक बोध पर पहली बार इस कृति में ध्यान आकृष्ट कराया गया है।

यह पुस्तक और भी उपादेय हो सके इस दृष्टि से प्रस्तुत नवीन संस्करण में कुछ अभिनव सामग्री जोड़ी गई है। इस पुस्तक की प्रथम संस्करण की भूमिका में संस्कृत साहित्य की पीठिका प्रस्तुत करते हुए उसके समग्र अवबोध के लिये कतिपय मूलाधारों पर चर्चा की गई थी। इस नवीन संस्करण में इस भूमिका में संस्कृत साहित्य के अन्य भाषाओं में रचे गये साहित्य से संवाद पर कुछ तथ्यात्मक सामग्री जोड़ी गई है, इसके साथ ही तीन नवीन प्रकरण भी संक्षेप में संयोजित कर दिये गये हैं—संस्कृत साहित्य में इतिहास की अवधारणा, संस्कृत और वर्तमान विश्व तथा संस्कृत साहित्य : राज्याश्रय और राज्यनिरपेक्षता। यद्यपि इन तीनों विषयों का सम्यक् विवेचन विशाल शोधग्रन्थों में ही हो सकता है, पर सूत्ररूप में इन पर जो संकेत किया गया है, उससे छात्रों को आगे के अध्ययन के लिये आधार प्राप्त होगा। पूरी पुस्तक में यत्र तत्र विषय की स्पष्टता की दृष्टि से परिवर्धन किया गया है। पहले संस्करण में कतिपय अल्पज्ञात किन्तु महत्त्वपूर्ण कृतियों पर जानकारी छूट गई थी,

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी कृत

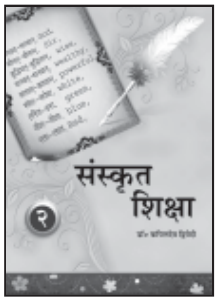

978-81-7124-970-1
अष्टम सं० : 2013 ई०
रु० 40.00 पृष्ठ : 56

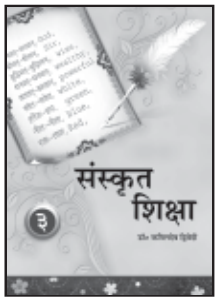

978-81-7124-969-5
नवम सं० : 2013 ई०
रु० 40.00 पृष्ठ : 64

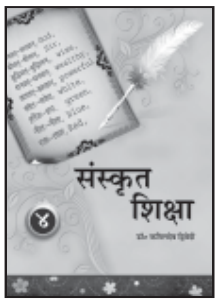

978-81-7124-825-4
तृतीय सं० : 2013 ई०
रु० 40.00 पृष्ठ : 72

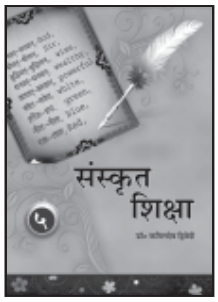

978-81-7124-830-8
तृतीय सं० : 2013 ई०
रु० 40.00 पृष्ठ : 72

- इसमें भाषा-शिक्षण की नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई है तथा अत्यन्त सरल और रोचक ढंग से संस्कृत की शिक्षा दी गई है।
- संस्कृत-शिक्षा 5 भागों में पूर्ण हुई है। यह कक्षा 6 से 10 तक के छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है। प्रत्येक कक्षा के लिए एक-एक भाग है।
- प्रत्येक भाग में प्रयत्न किया गया है कि उस स्तर से सम्बद्ध व्याकरण का अंश उस भाग में विशेष रूप से सिखाया जाय।
- अभ्यासों के द्वारा व्याकरण की शिक्षा दी गई है।
- प्रारम्भिक छात्रों के लिए उपयोगी सभी बातें इसमें दी गई हैं।
- प्रत्येक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिए गए हैं।
- प्रत्येक अभ्यास में व्याकरण के एक या दो नियमों का अभ्यास कराया गया है। साथ ही आवश्यक शब्दावली भी दी गई है।
- उदाहरण-वाक्यों के द्वारा व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है। उनसे मिलते-जुलते हुए ही वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कराया गया है।
- प्रत्येक अभ्यास में कुछ विशेष शब्दों, धातुओं या प्रत्ययों आदि का अभ्यास कराया गया है।
- परिशिष्ट में आवश्यक शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं।

उन्हें इस संस्करण में जोड़ा गया है। प्रथम अध्याय में वेद के रचनाकाल के विषय में तिलक आदि के मतों पर अपेक्षित जानकारी बढ़ाई गई है। इसी अध्याय में उपनिषद् दर्शन और ग्रीक दर्शन, वेदों में कला विषयक चिन्तन, वेदों में विज्ञान—ये तीन नवीन प्रकरण जोड़े गये हैं। द्वितीय अध्याय में भी महाभारत—भारतीय काव्यचिन्तन का मूल तथा महाभारत और भारतीय कलापरम्परा ये दो अतिरिक्त विषय इस संस्करण में रखे गये हैं।

इस पुस्तक में ऐसे कतिपय बिन्दु विवेचित किये गये हैं, जो प्राय: पूर्व प्रकाशित संस्कृत साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में नहीं मिलते। इनमें से एक है कवियों की पारम्परिक समीक्षा। प्रस्तुत नवीन संस्करण में पारम्परिक समीक्षा की दृष्टि से भी अनेकत्र परिवर्धन किया गया है।

संस्कृत साहित्य की परम्परा के विषय में बनी हुई अनेक भ्रांतियों को भी यह पुस्तक तोड़ती है, तथा इस साहित्य में प्रतिबिंबित उदात्त जीवन मूल्यों तथा चिंतन परम्पराओं के संदर्भ में भी संस्कृत कवियों के अवदान, उपलब्धि तथा सीमाओं पर तेजस्वी विमर्श प्रस्तुत करती है। संस्कृत काव्यों से सुन्दर उद्धरण यहाँ सरल-सुबोध अनुवाद के साथ प्रस्तुत किये गये हैं, जिससे संस्कृत न जानने वाले पाठक भी मूल के सौन्दर्य का आनन्द ले सकते हैं। वैदिक साहित्य से बीसवीं शताब्दी तक विकसित संस्कृत साहित्य की परम्परा का यह आकलन छात्रों, सामान्य पाठकों तथा अनुसंधाताओं के लिये समान रूप से उपयोगी है।

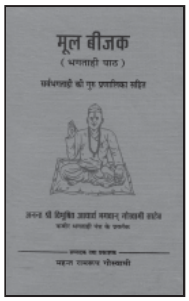

श्रीसद्‌गुरु कबीर साहेब कृत

मूल बीजक
(भगताही पाठ)

सम्पादक :
महन्त रामरूप गोस्वामी

द्वितीय संस्करण : 2013 ई०
पृष्ठ : 628

सजि. : रु० 300.00

वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि कोई भी रचनाकार त्रिकालदर्शी होता है। वर्तमान की सही परख करनेवाला रचनाकार भविष्य की परख करने की सामर्थ्य रखता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या 'मसि कागज छुयो नहिं, कलम गही नहीं हाथ' का उद्‌घोष करने वाले 15वीं शताब्दी का प्रसिद्ध सद्‌गुरु कबीर साहेब आज के बुद्धिवादी समाज के लिए प्रासंगिक हैं? क्या आज के समाज में उनकी तथा उनकी कविता की जरूरत है? क्या एक मस्त मौला, मनमौजी एवं अक्खड़ उपदेशक समाज सुधारक के उपदेश को कोई महत्व रखते हैं? क्या युग कवि सद्‌गुरु कबीर साहेब द्वारा ओढ़ी गई चादर आज भी वैसी की वैसी है? इन तमाम प्रश्नों पर विचार करना क्या आज के लोगों के लिए आवश्यक है?

वास्तविकता तो यह है कि वर्तमान युग में सद्‌गुरु कवि कबीर साहेब की वाणी एवं कबीर बीजक की बड़ी उपयोगिता है। कुशल उपदेशक अपने समय में तो प्रासंगिक रहते ही हैं, साथ ही युग-युगान्तर तक उनकी अमर वाणी की आवश्यकता पड़ती है।

भारत के महान योगी
भाग 7 व 8

विश्वनाथ मुखर्जी

चतुर्थ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 248

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-89498-59-7

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

भारत के महान योगी का यह खण्ड पिछले खण्डों से अलग ढंग का है। इस खण्ड में जिन संतों का विवरण है, वे सभी अलग-अलग ढंग के साधक थे।

प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी के मानसपुत्र श्री कुलदानन्द ब्रह्मचारी थे। आपने अपने गुरुदेव की जीवनी पाँच खण्डों में लिखी है। गुरुदेव की जीवनी के साथ-साथ अपनी कठोर तपस्या के बारे में उल्लेख किया है। केवल यही नहीं, अपनी तमाम कमजोरियों का भी उल्लेख किया है जिसे प्राय: लोग छिपा जाते हैं। विजयकृष्ण गोस्वामी के अनेक शिष्य हैं, पर कुलदानन्दजी की साधना विस्मयजनक है।

गोस्वामीजी के अप्रतिम शिष्य किरणचन्द्र दरवेश थे। सीढ़ी दर सीढ़ी साधक कैसे साधना-पथ पर बढ़ते गये और अन्त में योगिराज के पद पर प्रतिष्ठित हो गये, ध्यान देने योग्य बात है।

लाटू महाराज सामान्य घरेलू नौकर थे, पर प्रथम दर्शन में ही वे परमहंस के अनुगत हो गये। रामकृष्ण जी की निगाहों ने अपने भक्त को पहचान लिया। लाटू महाराज के विचार, कार्य सभी अद्‌भुत होते थे, इसलिए संन्यास लेने के बाद वे स्वामी अद्‌भुतानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कापालिकों और अघोरियों के कुकृत्य से क्षुब्ध होकर बाबा गोरखनाथ ने नाथ-सम्प्रदाय की स्थापना की। आज भी वही नाथ-सम्प्रदाय के अधिष्ठाता माने जाते हैं। इस सम्प्रदाय में निवृत्तिनाथ, संत ज्ञानेश्वर, बाबा गंभीरनाथ जैसे संत हुए हैं। महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर का व्यापक प्रभाव है। इसी प्रकार बंगाल में गंभीरनाथ का था। आज भी वहाँ उनके अनेक भक्त और शिष्य-प्रशिष्य हैं।

कलियुग में लोग तंत्र-मंत्र और तपस्या से बचना चाहते हैं। ऐसे साधकों के लिए कुछ संतों ने हरिनाम जपने का निर्देश दिया है, क्योंकि योग-साधना सरल नहीं है।

हरिनाम की साधना का निर्देश सर्वश्री बाबा सीताराम ओंकारनाथ, ठाकुर अनुकूलचन्द्र, जगद्‌बन्धु, ए०सी० भक्तिवेदान्त स्वामी, मोहनानन्द आदि संतों ने दिया है, केवल भारत में ही नहीं, इसका प्रसार सुदूर पश्चिम तक फैला है। संसार के अनेक देशों में मठ और मन्दिर स्थापित हो गये हैं। हरे कृष्ण आन्दोलन इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भारतीय संतों की इस देन को लोग भुला नहीं सकेंगे।

लेखक तथा प्रकाशक के पास अक्सर इस आशय के पत्र आते हैं कि वर्तमान काल में ऐसे जीवित संत कहाँ हैं? जिज्ञासु पाठकों के लिए यह बताना उचित होगा कि ऐसे अनेक संत भारत में हैं जो अपने को छिपाकर रखते हैं। इस संग्रह के अध्ययन से स्पष्ट हो जायगा।

तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी

अरुण कुमार शर्मा

द्वितीय संस्करण :2013 ई०

पृष्ठ : 200

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-959-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हमारे भीतर असीम नैसर्गिक और परानैसर्गिक शक्तियों का विशाल भण्डार भरा हुआ है। हमें सबसे पहले उन शक्तियों को पहचानना चाहिए। जब तक हम उन्हें नहीं पहचानते और नहीं समझते तब तक हमारी इन्द्रियाँ उन सीमाओं में बँधी रहेंगी जो हमें अपनी आश्चर्यजनक और पारलौकिक शक्तियों के प्रयोग से रोकती हैं। एकमात्र यही कारण है कि लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से प्राच्य ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित जो तथ्य और सत्य प्रस्तुत करता है उसे पढ़ कर लोग यही समझते हैं कि या तो यह बहुत ऊँची कल्पना है या फिर बिल्कुल ही अलौकिक वस्तु है—जिसे हर व्यक्ति न समझ सकता है, और न तो प्राप्त ही कर सकता है, ये दोनों धारणायें भ्रामक हैं। साधारण लोग इस बात को अपनी संकीर्ण मानसिक और बौद्धिक शक्ति के कारण समझने का प्रयास ही नहीं कर पाते कि इनकी भूत-प्रेत अथवा योग-तंत्र पर आधारित रचनाओं की रहस्यवादी घटनाएँ पूर्णतया वैज्ञानिक और प्रकृति के नियम के अनुरूप होती हैं।

प्रस्तुत कथा संग्रह 'तिब्बत की वह

रहस्यमयी घाटी' के अन्तर्गत पन्द्रह कथाओं का संग्रह है। ये अपने आप में विशिष्ट तो हैं ही, रहस्य रोमाञ्च से भरपूर और सनसनीखेज भी हैं। यद्यपि ये अविश्वसनीय लगें किन्तु इनमें अतिशयोक्ति नहीं है। लेखक की भाषा में प्राञ्जलता और भाषा पर अधिकार भी है।

प्रकाश पथ का यात्री

योगेश्वर

तृतीय संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 208

अजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-89498-61-0

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

महात्मा योगेश्वरजी भारत के एक महान् ज्योतिर्धर थे। युगपुरुष इस धरती पर अवतरित होते हैं और अपने चरणचिह्न अंकित कर चले जाते हैं। ऐसे समर्थ महापुरुष जिधर दृष्टि करते हैं, इतिहास उधर नत हो जाता है, अर्थात् युगपुरुष इतिहास के संकेत पर नहीं चलते वरन् इतिहास उनके आदेशानुसार चलता है। महात्मा योगेश्वरजी ऐसे ही युगपुरुष थे, जिनका उदय भारतीय क्षितिज पर हुआ। महात्मा योगेश्वरजी सिन्धु नहीं, बिन्दु नहीं किन्तु बिन्दु एवं सिन्धु में तरंग उत्पन्न करनेवाले निष्कलंक इन्दु हैं।

'प्रकाश-पथ का यात्री' महात्मा योगेश्वरजी की आत्मकथा है। आत्मकथा के स्वरूप की दृष्टि से यह एक सफल रचना है। इसमें लेखक अधिक सत्यता और वास्तविकता के साथ प्रकट हुआ है। इसमें महात्माजी के जीवन का एक शृंखलाबद्ध विवरण प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने अपनी विशाल जीवन-सामग्री की पृष्ठभूमि से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों एवं घटनाओं को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया है। अपनी सीधी-सादी सरल, सुबोध भाषा-शैली में अपनी जीवनसाधना की विविध सिद्धियों को स्वमुख से वर्णित किया है।

आत्मकथा में वर्णित उनके साधनामय जीवन का इतिहास, सरस, तर्कसंगत, बुद्धिसंगत और उपकारक है। बरसों और युगों तक वह साधकों का कल्याण करता रहेगा, प्रेरणा भी देता रहेगा। यह संसार-सागर में दीप-स्तम्भ बनकर रहेगा। आध्यात्मिक अनुभूतियाँ और जीवन-विकास की सम्पूर्ण समझ देनेवाली आत्मकथा, यह प्रथम ही है, ऐसा कहना शायद अतिशयोक्ति नहीं है। इसलिए परमात्मा के परम कृपापात्र, परम आदरणीय, परम वन्दनीय, श्री योगेश्वरजी का जितना अभिनन्दन किया जाय थोड़ा ही है।

इतिहास दर्शन

प्रो० झारखण्डे चौबे

एकादश संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 408

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-962-6

अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-7124-963-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वैसे तो भारत के सभी विश्वविद्यालयों में इतिहास के अध्ययन की व्यवस्था है लेकिन उनके पाठ्यक्रमों में इतिहास-दर्शन के लिए उचित स्थान अभी तक नहीं प्राप्त हुआ है। यहाँ तक कि इतिहास-लेखक भी प्राय: इस विषय से अनभिज्ञ रहते हैं। फलत: उनकी कृतियों में इतिहास-लेखन की बहुत-सी मूलभूत बातों का स्पष्ट अभाव दिखाई देता है। इतिहास की सर्वमान्य परिभाषा ही एक जटिल समस्या बन गयी है। सामान्य लेखक कुछ प्रामाणिक ग्रन्थों को माडल मानकर अपने लेखन का कार्य करता है और इतिहास-दर्शन की विधाओं से अपरिचित रह जाता है। विषय को बहुत गूढ़ और जटिल बनाने में दार्शनिकों का भी बड़ा हाथ है। वास्तव में यह विषय प्रमुखत: दार्शनिकों का विषय हो गया है, जिन्हें इतिहास-लेखन का अपर्याप्त अनुभव रहता है और इतिहासकार दर्शन से प्राय: अनभिज्ञ रहते हैं। लेकिन यह निर्विवाद है कि इतिहास-दर्शन की सामान्य जानकारी इतिहास-लेखन के कार्य को अधिक ठोस और दोषमुक्त बना सकती है।

इतिहास-दर्शन अतीत सम्बन्धी असीम, अनंत एवं अगाध अजस्र ज्ञान गंगा है। अतीत के अदृश्य एवं रहस्यवादी स्वरूप ने दार्शनिकों का सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट किया क्योंकि वे अदृश्य तथा रहस्यवाद के चिंतन में सदैव आत्मविभोर रहते थे। अल्पकाल में ही पाश्चात्य जगत का इतिहास-क्षितिज विको, हर्डर, कांट, हीगेल, कार्ल मार्क्स, कॉम्ते, कॉलिंगवुड जैसे चिंतकों से सुशोभित हो उठा। भारतीय मनीषियों में भी अतीत चिंतन के प्रति अदम्य उत्साह रहा है।

उन्होंने कालवाद, नियतिवाद, प्रगतिवाद, कर्मवाद के सम्बन्ध में पर्याप्त चिंतन किया है। पाश्चात्य ने हमारे ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र को सर्वाधिक प्रभावित किया है। परन्तु इतिहास-दर्शन दीर्घकाल तक इतिहासविदों का ध्यान आकृष्ट करने में सफल नहीं रहा है। वर्तमान संस्करण तीन दशक तक अनवरत चिंतन, अध्ययन एवं अध्यापन का परिणाम है। परिणामस्वरूप प्रस्तुत रचना के सभी अध्यायों का नवीनीकरण एवं यथोचित परिवर्तन नवीन साक्ष्यों तथा तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। विषय की दुरूहता को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के लिए संक्षिप्त एवं ग्राह्य प्रस्तुतीकरण का यथाशक्य प्रयास किया गया है।

इतिहास दर्शन पर लिखित प्रस्तुत ग्रन्थ एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति का सराहनीय प्रयास है। यह रचना लेखक के कठिन परिश्रम और चिन्तन का एक अच्छा नमूना है। इतिहास-दर्शन से सम्बन्धित प्राय: सभी विषयों का इस पुस्तक में विद्वत्तापूर्ण विवेचन किया गया है। हिन्दी में इस विषय पर प्रामाणिक पुस्तकों का नितान्त अभाव है। इतिहास-दर्शन के व्यापक और गहन अध्ययन के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों के अतिरिक्त इतिहास में रुचि रखने वाले पाठक भी इसके अध्ययन से लाभान्वित होंगे।

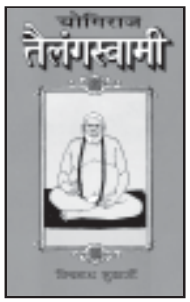

योगिराज तैलंग स्वामी

विश्वनाथ मुखर्जी

चतुर्थ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 92

अजि. : रु० 45.00 ISBN : 978-81-89498-62-7

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

अनादिकाल से काशी साधकों के निकट साधना-भूमि रही है। बुद्ध से लेकर स्वामी विशुद्धानन्द तक यहाँ निवास करते रहे।

तैलंग स्वामी एक ऐसे योगिराज थे जो 280 वर्ष तक जीवित रहे। सन् 1737 ई० से 1887 ई० तक यानी पूरे 150 वर्ष तक वे काशी में थे। आपकी योग विभूतियों से प्रभावित होकर नगर के लोग उन्हें साक्षात् विश्वनाथ समझते थे। तैलंग स्वामी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि आपने न किसी मठ की स्थापना की और न अपने नाम से सम्प्रदाय चलाया।

महात्मा तैलंग स्वामी के सम्बन्ध में बंगला में सर्वप्रथम पुस्तक श्री नारायणचन्द्र दास ने लिखकर छपवायी। यह 19वीं शताब्दी के अन्त या बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण की घटना है। सन् 1918 में स्वामीजी के अन्तिम गृहस्थ शिष्य श्री उमाचरण मुखोपाध्याय ने 'महात्मा तैलंग स्वामीर जीवन चरित ओ तत्त्वोपदेश' लिखकर छपवायी।

श्री उमाचरण मुखोपाध्याय की पुस्तक के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन काशी के ही किसी सज्जन ने किया था, जो एक अर्से से अप्राप्त है। उस अभाव की पूर्ति इस पुस्तक के माध्यम से की गयी है। विश्वास है कि योगिराज तैलंग स्वामी के भक्तों तथा जिज्ञासुओं को यह कृति पसन्द आयेगी।

आगामी प्रकाशन

पहली बार **भोजपुरी भाषा** में प्रस्तुत **डॉ० अर्जुन तिवारी** की कृति

भोजपुरी साहित्य के इतिहास

'सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा' का अत्यन्त मनोरम भू-भाग भोजपुर क्षेत्र ही शिव, राम, कृष्ण की कर्मभूमि है। करुणामूर्ति बुद्ध और आचार्य शंकर का तेजोद्दीप्त पुण्य क्षेत्र यही भोजपुर है जिसे परशुराम, भृगु, गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य ने अपनी साधना स्थली के रूप में वरेण्य माना। राजा हरिश्चन्द्र, गुरु गोरखनाथ की सिद्ध स्थली की भाषा भोजपुरी है—

फक्कड़ कबीर के बोली में बोले वाला
ई भोजपुर विद्रोह, आग के पुतला ह।
चउदहो जिला चिग्घाड़ उठे मिल एक बार
तब ओकरा आगे सउँसे दुनिया कुछ ना ह।

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने सभी तथ्यों को अच्छी तरह समझ कर लिखा—

''भोजपुरी क्षेत्र में बसने वाले लोग अपनी विशिष्टता के कारण दोनों बिहारी बोलियों (मैथिली, मगही) बोलने वालों से नितान्त भिन्न हैं। ये लोग वास्तव में सतर्क और क्रियाशील जाति के लोग हैं। इन लोगों में रूढ़िवादिता का अभाव है और युद्ध के लिए युद्ध में लग जाने की प्रकृति है। ये लोग पूरे भारत में फैले हुए हैं और इनमें से हर व्यक्ति किसी सुअवसर से अपना भाग्य बनाने के लिए हमेशा तैयार रहता है। इन लोगों ने बड़ी संख्या में हिन्दुस्तानी सेना में भर्ती होकर उसे सुसज्जित किया.....भोजपुरिया को हाथ में लाठी लेकर प्राय: अपने घर से दूर खेत में जाते हुए देखा जा सकता है। भोजपुरी ऐसे लोगों की भाषा है।''

कहा जाता है कि 'भाषामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते।' जीवन हेतु भाषा की अपरिहार्यता है, साहित्य की अनिवार्यता है। भाषा और साहित्य का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। भाषा माँ है तो साहित्य उसकी सन्तान है। भाषा में गतिशीलता, परिवर्तनशीलता है जिसकी सुरक्षा साहित्य से सम्भव है। भोजपुरी भाषा के मर्म को जानने के लिए उसके साहित्य का अनुशीलन आवश्यक है तथा इस साहित्य के रहस्य, रोमांच, विशिष्टता हेतु भोजपुरी साहित्य के इतिहास का गम्भीर अध्ययन-मनन जरूरी है। डॉ० अर्जुन तिवारी द्वारा 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' की पाण्डुलिपि को आद्योपान्त पढ़ने के बाद आज मैं सात्त्विक रूप से गदगद हूँ, लगता है मुझे 'ब्रह्मानन्द सहोदर' की प्राप्ति हो गई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की तरह तत्त्वान्वेषणी प्रतिभा के आधार पर डॉ० तिवारी ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में इतिहास को परिभाषित किया है—

''जन-मन के संस्कृति-सभ्यता के लमहर परम्परा होला जवना के चूर में चूर मिला के जब साहित्य के साथे सामञ्जस्य बइठावल जाला त उहे इतिहास ह। भोजपुरी माई, माटी आ मनई के चित्त, चिन्तन आ चेतना में हो रहल परिवर्तन के साथे-साथे साहित्य में समसामयिक क्रमिक संवर्द्धन के दस्तावेज के भोजपुरी साहित्य के इतिहास कहे के चाहीं। राजा भोज, वीर कुँवर सिंह के उपलब्धि के साखी-गवाही जवन साहित्य बा ओकर विश्लेषण-विवेचन भोजपुरी साहित्य के इतिहास ह। ई इतिहास रात-दिन हमार गुन गावता आ चारो ओर मानवता के पाठ पढ़ावता।''

संकीर्णता से हटकर भोजपुरी एक क्षेत्रीय भाषा है किन्तु इसकी लोकप्रियता अन्तर्राष्ट्रीय है। यह भ्रम निर्मूल है कि भोजपुरी के उत्थान से हिन्दी का ह्रास होगा। तथ्य तो यह है कि हिन्दी की शक्ति स्वरूपा ब्रजी, अवधी, राजस्थानी, मैथिली, मगही, भोजपुरी है, इन सभी का उत्थान, विकास हिन्दी का उत्थान और विकास है। ये एक दूसरे के आत्मीय हैं, आत्मोन्नयन के स्रोत हैं न कि पराए हैं, न द्वेषी हैं। भोजपुरी सन्तों की भाषा है। सन्त लोक बोली में गाता है। सन्तों की वाणी लहर सदृश है जो ढाई आखर वाले प्रेम को अपनी अंकवारी में भर लेती है। भोजपुरी में सन्त काव्य एक धरोहर है। उत्तर भारत की सन्त परम्परा सही माने में भोजपुरी साहित्य की अनमोल परम्परा है। जो भारतीय संस्कृति की अपनी थाती है।

किसी भी इतिहास ग्रन्थ का प्राण तत्त्व उसका काल-निर्धारण और नामकरण होता है। 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' में काल-निर्धारण और नामकरण अत्यन्त संतुलित, तर्क सम्मत और वैज्ञानिक आधार वाला है। धान के कटोरे भोजपुरी क्षेत्र में धान की बोआई, रोपाई, निराई, गदराई से मेल बैठाकर काल-निर्धारण किया गया है। आजकल की नई पीढ़ी को हो सकता है कि ये शब्द न पचें इसलिए ऐतिहासिक परम्परानुरूप भी काल-निर्धारण द्रष्टव्य है—

आरम्भ	(पहिला डेग) 700 — 1100 ई०	
	प्रवर्तन (सिद्ध आ नाथ) काल	
	(दूसरा डेग) 1100 — 1400 ई०	
	लोक गाथा काल	
मध्य	(पूर्व) 1400 — 1757 ई०	
	प्रबोधन (सन्त समागम) काल	
	(उत्तर) 1758 — 1974 ई०	
	जागरण काल	
आधुनिक	1975 ई० ..लोक व्याप्ति काल	

गुरु गोरखनाथ, कुँवर सिंह, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, कबीर, राहुल सांकृत्यायन, भिखारी ठाकुर जैसे युग प्रवर्तकों एवं उनके अनुयायियों की राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों का सोदाहरण विवेचन इस ग्रन्थ की विशिष्टता है। मेरी तो सुस्पष्ट मान्यता है कि इसको पढ़कर कोई भी लोक कलाकार, लोक साहित्यकार हो सकता है। क्योंकि भोजपुरी लोक कंठ में विराजती है, भोजपुरी बोलने, पढ़ने, लिखने वाला स्वत: एक मौलिक साहित्यकार होता है। 'पुस्तकी भवति पंडित:' के अनुसार इस ग्रन्थ का धारक पण्डित, कवि, लोकमंच का स्वामी तथा नाटककार होगा ही, यह निस्सन्देह है।

इस ग्रन्थ का अध्येता पहली बार जान सकेगा कि नाटक, फिल्म, टीवी, कम्प्यूटर द्वारा भोजपुरी ने अपनी धाक सर्वत्र जमा ली है जिसका श्रेय गोपाल सिंह 'नेपाली', मोती बी०ए०, भोलानाथ गहमरी, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', लालजी पाण्डेय 'अनजान', समीर, संगीतकार एस०एन० त्रिपाठी, चित्रगुप्त, स्व० नजीर हुसैन, सुजीत कुमार, लीला मिश्रा, पद्मा खन्ना, मनोज तिवारी, रवि किशन, मालिनी अवस्थी, निरहुआ को जाता है। भोजपुरी गीतों के प्रचार-प्रसार में डॉ० भगवान दास अरोड़ा, जगदीश चन्द्र अरोड़ा की भूमिका भी उल्लेख्य रही है। 'पंचायत घर' रेडियो कार्यक्रम के द्वारा कैलाश गौतम, हरिराम द्विवेदी 'हरि भैया', बुद्धन, जुगानी जैसे साधकों ने भोजपुरी को देहातों, निरक्षरों तक पहुँचाया। 'हमार टी०वी०', 'दंगल', 'महुआ', 'भोजपुरी मस्ती', 'अंजन' जैसे चैनल भोजपुरी को लोक में व्याप्त करा चुके हैं।

गौरवपूर्ण ग्रन्थ 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' का लोकहितकारी संग्रहणीय पक्ष 'भोजपुरी शब्द परिचय', 'नामानुक्रमणिका' तथा 'परिशिष्ट' है। कतिपय क्लिष्ट भोजपुरी शब्दों का अर्थ, नामानुक्रमणिका, तथा 'अछूत के शिकायत', 'बटोहिया', 'फिरंगिया', 'लुटेरवा' जैसी दुर्लभ रचनाओं को अविकल रूप में उपस्थापित कर ग्रन्थ को विशिष्ट बना दिया गया है। संविधान की आठवीं सूची में भोजपुरी को सम्मिलित करने के अभियान को जानने के निमित्त इस ग्रन्थ का अनुशीलन बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। **—हरिराम द्विवेदी**

मैंने प्रत्येक स्थान पर विश्राम खोजा, किन्तु वह एकान्त कोने में बैठकर पुस्तक पढ़ने के अतिरिक्त कहीं प्राप्त नहीं हो सकता।

—थॉमस ए० कैम्पिस

वेबसाइट : www.vvpbooks.com

स्मृति शेष

शिक्षाविद चन्द्रमा सिंह का निधन

ख्यातिलब्ध शिक्षाविद् एवं साहित्यकार 81 वर्षीय बाबू चन्द्रमा सिंह का विगत 24 जनवरी 2013 को निधन हो गया। स्व० सिंह जनवादी लेखक संघ के उपाध्यक्ष रहे। इनकी 'बाहों पर आकाश', 'सीमेंट का आदमी', 'नंगी है धूप चुप है दिन' आदि रचनाएँ काफी चर्चित रहीं।

गीतकार प्रो० रामस्वरूप नहीं रहे

नई दिल्ली। साहित्य जगत की जानीमानी हस्ती एवं प्रख्यात गीतकार प्रो० रामस्वरूप सिंदूर का लखनऊ के गोमतीनगर स्थित मेयो मेडिकल सेंटर में विगत 25 जनवरी 2013 को निधन हो गया। 83 वर्षीय प्रो० सिंदूर को साहित्यिक सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के 'साहित्य भूषण सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रभाष जोशी की पुण्यतिथि

जनसत्ता के संस्थापक संपादक एवं विद्वान् हिन्दी पत्रकार प्रभाष जोशी की तीसरी पुण्यतिथि पर विगत दिनों गाजियाबाद (उ०प्र०) में एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। प्रभाष परम्परा न्यास की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यास के अध्यक्ष और आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने की।

संगीत का रवि अस्त

विगत 12 दिसम्बर को काशी का बेटा, मैहर का शिष्य और एक सितार लेकर दुनिया का दिल जीतने वाला संगीत का सूरज डूब गया। अमेरिका के सैन डियागो में इस रवि के अस्त होते ही भारतीय संगीत ने अपना सबसे प्रभावशाली और चमकदार राजदूत खो दिया। 92 वर्ष के भारत रत्न पं० रविशंकर बनारस के एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में सात अप्रैल 1920 को जन्मे। रविशंकर संगीत के वैश्विक मंच पर भारत का पहला हस्ताक्षर थे।

'सारे जहाँ...' की धुन बनाई : इकबाल के 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' की धुन पंडित जी ने बनाई थी। कुछ फिल्मों में संगीत भी दिया जिसमें **गाँधी** के लिए उनका आस्कर में नामांकन हुआ।

विश्व संगीत का गॉडफादर : अंग्रेजी धुनों की दीवानी युवा पीढ़ी को यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि बीटल्स के जार्ज हैरीसन ने पं० रविशंकर को विश्व संगीत का गॉडफादर कहा था। तीन बार के ग्रेमी अवार्ड विजेता पं० रविशंकर के प्रशंसकों में यहूदी मेनुहिन जैसे दक्ष संगीतकार भी थे। यह रविशंकर ही थे जिन्होंने बीटल्स का भारतीय संगीत और संस्कृति से परिचय कराया। साठ के दशक में हिप्पी आन्दोलन में पं० रविशंकर भी शामिल हुए और इस तीव्रता से उस संस्कृति को उन्होंने आत्मसात किया कि उसके अभिन्न अंग बने। शास्त्रीय संगीत की ललक ऐसी कि फिर सात बरस तक मध्य प्रदेश के मैहर में रहकर उस्ताद अलाउद्दीन खाँ से सितार सीखा।

नहीं रहे कथाकार कामतानाथ

लखनऊ। देश के शीर्षस्थ कथाकारों में से एक और कालकथा जैसे कालजयी उपन्यास के सर्जक कामतानाथ का विगत 7 दिसम्बर 2012 को निधन हो गया। उन्होंने कहानी, उपन्यास, यात्रा साहित्य व नाटक जैसी विधाओं में लेखन पर ख्याति पायी।

उनकी प्रमुख कृतियों में समुद्रतट पर खुलने वाली खिड़की, सुबह होने तक, काल कथा, पिघलेगी बर्फ, तीसरी साँस, सब ठीक हो जायेगा, कल्पतरु की छाया, दाखला डॉट कॉम, संक्रमण आदि के साथ अनुवाद और बाल साहित्य भी चर्चा में रहे हैं। उनको पहल सम्मान, मुक्तिबोध पुरस्कार (मध्यप्रदेश), साहित्यभूषण, यशपाल पुरस्कार व महात्मा गाँधी सम्मान (हिन्दी संस्थान) से सम्मानित किया जा चुका है।

कवियित्री वीरबाला का निधन

ख्यातिलब्ध कथाकार व कवियित्री वीरबाला वर्मा का निधन हो गया। वे 74 वर्ष की थीं। कथाकार वीरबाला ने कहानी व कविता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

वायलिन वादक का निधन

चेन्नई स्थित सुप्रसिद्ध वायलिन वादक एम०एस० गोपालकृष्णन का विगत 3 जनवरी 2013 को निधन हो गया। वह पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे।

साहित्यकार भवानी शंकर शुक्ल का निधन

प्रसिद्ध साहित्यकार भवानी शंकर शुक्ल का विगत 10 दिसम्बर 2012 को निधन हो गया। वह साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल के छोटे भाई थे।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

स्मृति : भोजपुरी के स्मारक 'भिखारी ठाकुर'

भोजपुरी के प्रतीक-पुरुष भिखारी ठाकुर अपनी रचनाधर्मिता के कारण भारतीय लोक साहित्यिक जगत में जितने लोकप्रिय हैं, अपनी उक्ति 'अबहीं नाम भईल बा थोरा' को चरितार्थ करते हुए, उससे कई गुना सात समन्दर पार के मारीशस, फिजी और सूरीनाम जैसे देशों में भी लोकप्रिय हैं। भोजपुरी लोकलय, लोकताल और लोकधुन की लहरों का यह राजहंस आज देशकाल और भाषा की बंदिशों को लाँघता विश्व लोक संस्कृति की एक धरोहर बन बैठा है।

देश की सर्वोच्च नाट्य प्रशिक्षण संस्था नेशनल स्कूल आफ ड्रामा (एनएसडी) में उनकी बिदेसिया धुन एवं नाट्य को भारत की सबसे लोकप्रिय लोकधुन एवं लोकनाट्य शैली के रूप में छात्रों को पढ़ाई जाती है। महात्मा गाँधी के लगभग समकालीन भिखारी अपने नाटकों में वही सन्देश दे रहे थे, जो बापू अपनी राजनीतिक सक्रियता से दे रहे थे। बापू के सारे समाजोद्धार विषयक विचार ही लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के तमाम कालजयी नाटकों के कथानक हैं। चाहे छुआछूत हो या बेमेल विवाह, नशाबन्दी हो अथवा बुजुर्गों की सेवा। भिखारी ठाकुर की अपार लोकप्रिय नौटंकियों यथा बेटीबेचवा, भाई विरोध, बिदेसिया और गबर घिचोर के मूल कथानक यही हैं। बापू का अध्यात्म, रामराज भिखारी को भी उतना ही प्रिय था।

भिखारी रचनावली में इनके भजनों तथा रामरतन माला सिरीकृष्ण भजनावली का भी उतना ही महत्व है, जितना उनकी नौटंकियों का है। शेक्सपियर की तरह रंगमंच का परदा खींचने वाले से लेकर लेखक-निर्देशक भिखारी भी थे, जो अपनी नौटंकियों में सूत्रधार से लेकर लबार, प्रवाचक, उपदेशक, अभिनेता, गायक, नर्तक, लेखक, निर्देशक, संवाद लेखक की सारी भूमिकाओं को निभाते थे। भिखारी ठाकुर अपनी नाट्यकला एवं कथ्य तथा काव्य के कारण भोजपुरी भाषियों के उसी प्रकार हृदयहार बने रहेंगे जिस प्रकार मैथिली के विद्यापति अथवा बंगाल के रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं।

संक्षिप्त परिचय

नाम	:	भिखारी ठाकुर
जन्म	:	18 दिसम्बर 1887
जन्म स्थान	:	कुतुबपुर दियारा, छपरा, सारण
मृत्यु	:	1971
पिता	:	दलसिंगार ठाकुर
माता	:	मनतुरना देवी
गुरु	:	भगवान साह

प्रसिद्ध कृतियाँ : बिदेसिया, गबर घिचोर, बेटीबेचवा, पिया निसही, गंगा नहान, राधेश्याम बहार, सीताराम बहार, नाई बहार, भाई विरोध, रामनाम कीर्तनमाला, बुढ़शाला के बथान आदि।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

साहित्यिक तुला पर वाल्मीमिकी-रामायण : विजय रंजन, प्रकाशक : अवध-अर्चना प्रकाशन, 4/14/41 ए, महताब बाग, अवधपुरी कालोनी, फेज-2, फैजाबाद-224001 (उ०प्र०), मूल्य : 300/- रु०

× × प्राचीन, मध्ययुगीन एवं अर्वाचीन साहित्य-निकषों के आधार पर आदिकाव्य 'वाल्मीकि रामायण' का अनुशीलन करने की यह कोशिश श्लाघनीय तो है ही किन्तु विभिन्न मतवादों, काव्य-सम्प्रदायों एवं पश्चिमी काव्यशास्त्र की उत्तर आधुनिक पारिभाषिक-शब्दावलियों ने अनुशीलन को भ्रान्त कर दिया है। सार्थक है महाकाव्यों में सत्यं-शिवं-सुन्दरम् का मौलिक सन्धान।

गीत-शिवाजी : मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी, प्रकाशक : कंगरी पब्लिशिंग हाउस, 5/3, क्रॉस रोड, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड), मूल्य : 150/- रु०

× × मध्यकालीन राष्ट्रीय-चेतना के उद्दीपन हेतु जितने संत, महात्मा, कवियों का योगदान रहा है उनके बीच उसी भावभूमि को पल्लवित करने वाली शक्तियों के रूप में महाराणा प्रताप, गुरुगोविन्द सिंह एवं छत्रपति शिवाजी जैसे लोकनायकों का स्वातंत्र्य घोष भी जीवन-वृत्त के महत्वपूर्ण प्रसंगों की जानकारी के साथ उन्हें गीतबद्ध करने का प्रयास सराहनीय है।

स्वतंत्र भारत मूल्य : 150/- रु०

बापू! तब आप याद आये : नानुभाई नायक, प्रकाशक : साहित्य संगम, बाबा सीदी, पंचोली बाड़ी के सामने, गोपीपुरा, सूरत-395001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

× × गुजराती भाषा के साहित्यकार, पत्रकार, विचारक श्री नानुभाई नायक की ये दोनों कृतियाँ 21वीं सदी के भारतीय नागरिकों की दुर्दशा-ग्रस्त स्थिति के बीच महात्मा गाँधी की मानवीय संवेदना के धरातल का स्पर्श करते हुए समाधान खोजने की दिशा में सार्थक पहल हैं। पुस्तकें पठनीय हैं।

गृहस्थ गुरुगीता/भगवान शंकराचार्य चालीसा/द्वादश ज्योतिर्लिंग चालीसा : पं० गिरिमोहन गुरु, प्रकाशक : गोस्वामी सेवाश्रम नर्मदा मन्दिरम्, हा० बोर्ड कालोनी, होशंगाबाद (म०प्र०)

कला समय (अप्रैल-मई एवं अगस्त-सितम्बर 2012) : सं० विनय उपाध्याय, एम-एक्स-135, ई-7, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016

रंग संवाद (अप्रैल-जुलाई 2012) : सं० विनय उपाध्याय, प्रकाशक : वनमाली स्मृति सृजनपीठ, 22, इ-7, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016

साहित्य त्रिवेणी (जुलाई-सितम्बर 2012) : सं० कुँवर वीर सिंह मार्तण्ड, प्रकाशक : एफ-7, गवर्नमेंट क्वार्टर्स, बज-बज, कोलकाता-700137

विरासत : सं० वीरेन नंदा, प्रकाशक : अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति-समिति, निरालानगर, गोशाला रोड, मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार)

भारत वाणी (दिसम्बर 2012 एवं जनवरी 2013) : सं० डॉ० चंदूलाल दूबे, सचिव, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड-580001

मंगल प्रभात (दिसम्बर 2012 एवं जनवरी 2013) : सं० प्रो० रमेश भारद्वाज, गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, राजघाट, नई दिल्ली-1100002

अक्षर शिल्पी (अक्टूबर-दिसम्बर 2012) : सम्पादक : डॉ० विजय शिरढोणकर, एल-18, थद्दराम कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम०पी० नगर, भोपाल-462011

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 14 जनवरी-मार्च 2013 अंक : 1-2-3

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082 (Resi.) 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : **vvp@vsnl.com ▪ sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**